सलंग अंक ४५ जनवरी- २०११

श्री स्वामिनारायण

मुल्य रु. ५-००
मासिक

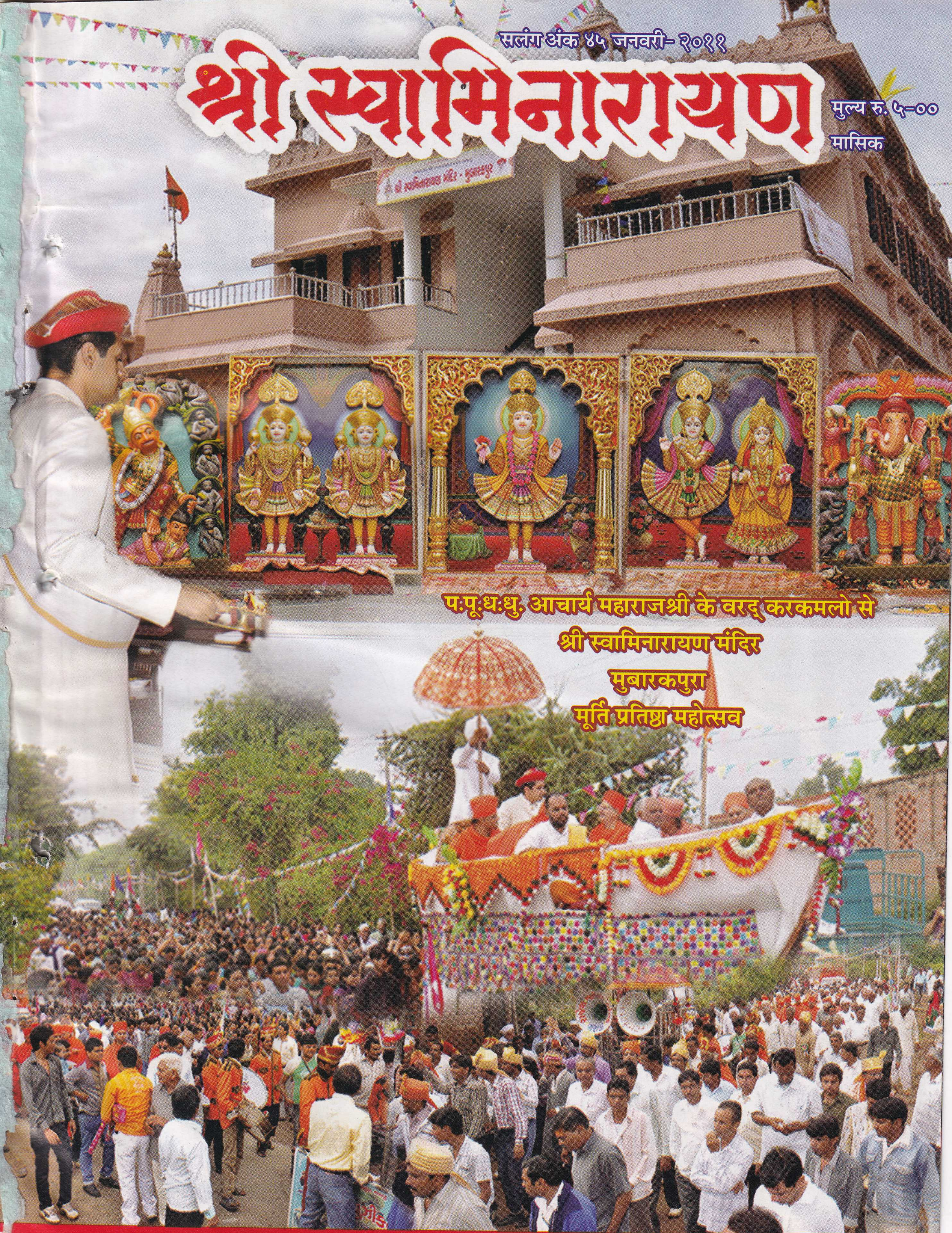

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् करकमलो से
श्री स्वामिनारायण मंदिर
मुबारकपुरा
मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

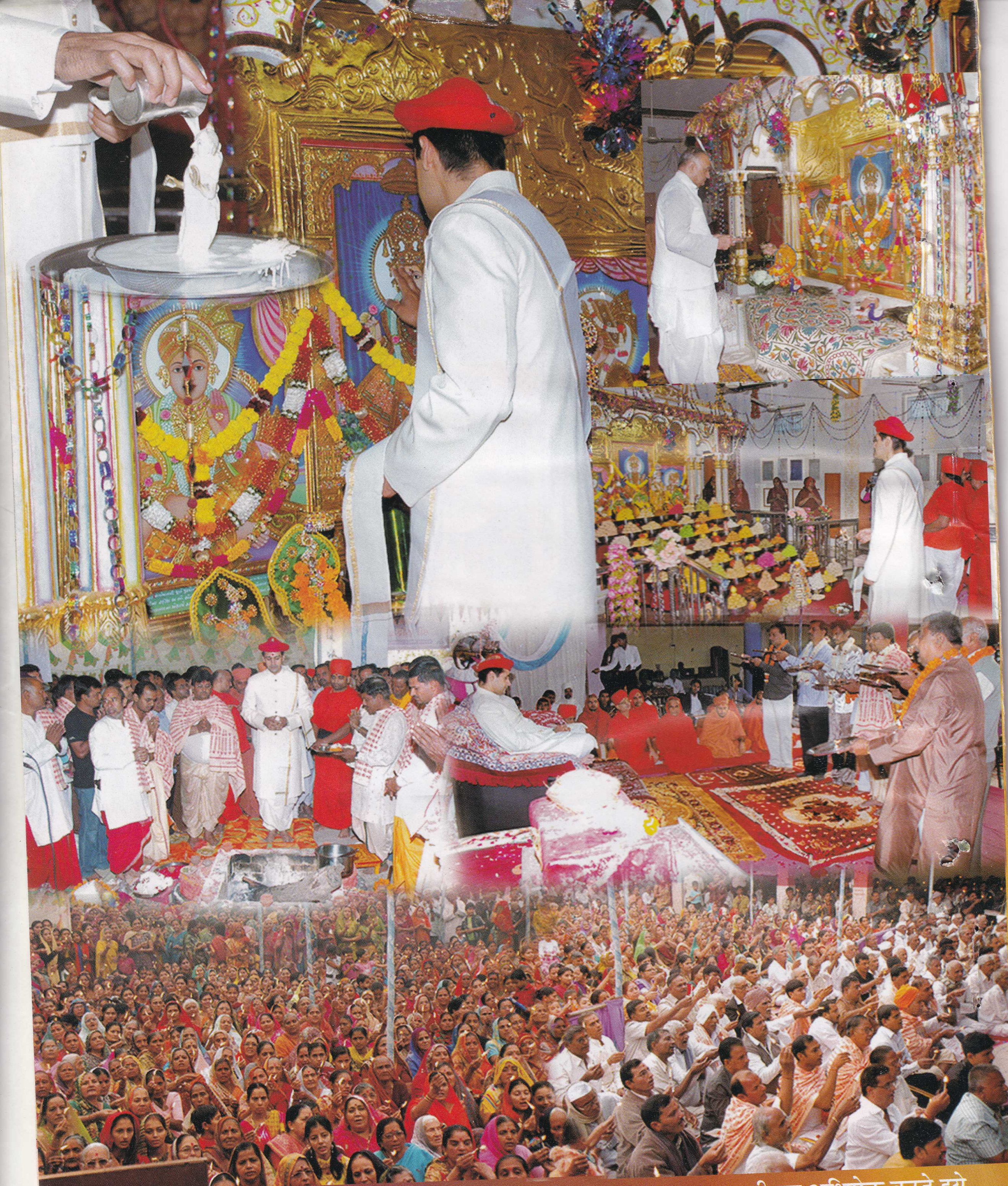

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोंका) मोरबी-रजतजयंती के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा कथा पारायण यज्ञ तथा

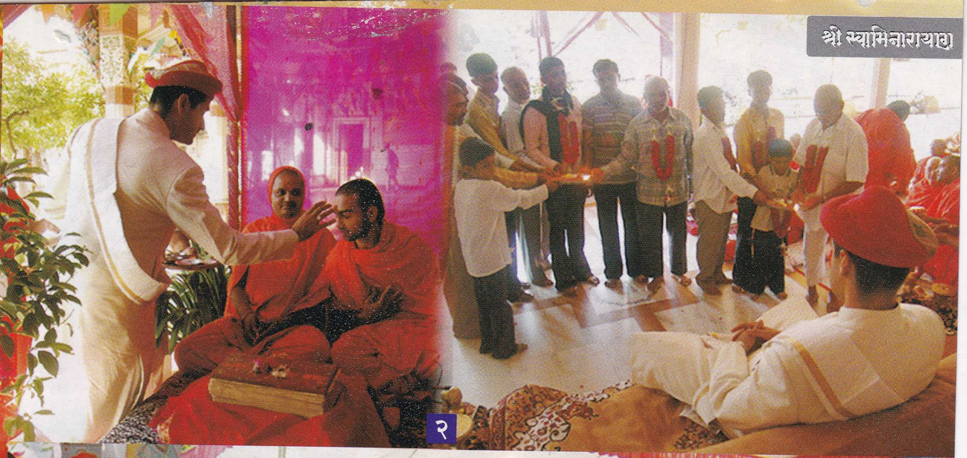

१. धनुर्मास में रंग महोल श्री घनश्याम महाराज का धर्मवंशी आचार्यश्री के पोशाक में दर्शन । २. कालुपुर मंदिर में पारायण प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुये यजमानश्री एवं कथा वक्ता पू. राम स्वामी एवं पू.शा. चैतन्यस्वरुप स्वामी । ३. सलाल गाँव में पारायण प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री यजमानश्री भगुभाई पटेल को आशीर्वाद देते हुये । ४. श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा में शाकोत्सव करते हुये तथा आशीर्वाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा साथ में संत । ५. टर्फ स्कुल नारणपुरा युवा स्नेह मिलन प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री । ६. कांकरिया मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में कथा पारायण एवं प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुये यजमान । ७. नारणघाट मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर लाभ लेते हुये भक्त ।

१. मोटेरा मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में कथा पारायण करते हुये पू. शा.स्वा. राम स्वामी तथा शाकोत्सव करते प.पू. लालजी महाराजश्री तथा साथ में छोटे पी.पी. स्वामी एवं संत मंडल । २. शिकागो मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारते हुये पूजारी स्वामी तथा तुलसी विवाह प्रसंग । ३. लेकलेन्ड मंदिर में ठाकुरजी की समूह आरती उतारते हुये हरिभक्त । ४. सीडनी मंदिर में ठाकुरजी के अन्नकूट दर्शन का लाभ लेते हुये हरिभक्त । ५. कालुपुर मंदिर में धनुर्मास के समय श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में धून करते हुये संत हरिभक्त ।

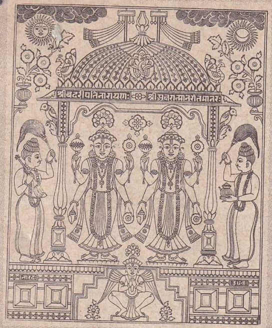

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ४ अंक : ४५ जनवरी-२०११

अ नु क्र म णि का

१. अस्मदीयम् ०३
२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०४
३. "मूर्ति" ०६
४. कलंक न कोई कुं लगात ०९
५. धनुर्मास १०
६. प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वचन में से अविस्मरणीय वात ११
७. गुरु मंत्र - दीक्षा महोत्सव १३
८. सत्संग बालवाटिका १५
९. भक्ति सुधा १७
१०. सद्गसंग समाचार २०

सम्पादकीयम

पवित्र धनुर्मास में अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के महामंत्र नाम का अविरत स्मरण किये, इस का फल अक्षुण्ण है। संसार के अन्य लोग जब प्रातः कालीन मधुर निद्रा का लाभ लेते रहते है, उस समय भगवान स्वामिनारायण के आश्रित त्यागी गृहस्थ-आबाल वृद्ध नरनारी मंदिर में मंगला आरती से लेकर धुन, कीर्तन, कथा एवं श्रृंगार आरती का दर्शन करने के बाद ही घर के लिये प्रस्थान करते हैं। ऐसा दिव्य सुख बड़े भाग्य से मिलता है। यथार्थ सुख की व्याख्या तो जो अपना सत्संगी होगा वही समझ सकता है। अन्यथा भौतिक सुख का आनन्द लेने वालों की तो परिकल्पना ही नही कर सकते। सत्संग के इस निराले सुख का इस तरह का सदा आनंद मिलता रहे इसके लिये भगवान की प्रसन्नता आवश्यक है।

प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम जिसके उद्घाटन का समय सन्निकट भविष्य में आ रहा है। देश विदेश के सभी हरिभक्त इसका लाभ लेने के लिये पधारने वाले हैं। अपने जीवन में पुनः ऐसा प्रसंग आयेगा या नहीं इसका क्या विश्वास ? इसलिये अपने सत्संगी इस भव्य महोत्सव को अपना समझकर (यजमान भी हम-मेहमान भी हम) छोटे हो या बड़े सभी तन-मन-धन से समर्पित होकर इस उत्सव को भव्यता से मनाने का संकल्प करें।

इस प्रकार का उत्सव भूतो न भविष्यति। इसलिये अपने सभी संत-हरिभक्त प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ कन्धे से कन्धा लगाकर अपने कर्तव्य पालन में लग जांय ऐसी सभी से अभ्यर्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(डिसम्बर-२०१०)

३. श्री स्वामिनाराग्रण मंदिर भद्रेशी (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग परपदार्पण।

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर नावी (मूलीदेश) पुनः प्रतिष्ठा तथा कथा प्रसंगपर पदार्पण।

४. मुबारकपुरा गाँव में श्री कमलेशभाई चिमनभाई पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर तथा गाँव के अन्य हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण।

५. सोजा गाँव में पदार्पण।
विहार गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
टर्फ स्कुल नारणपुरा में युवक स्नेह मिलन अपनी अध्यक्षता में सम्पन्न किये।

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा में पदार्पण। सायंकाल भुज पदार्पण।

७. भुज-कच्छ से मोरबी पधारे।

८. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी - पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

९. बालवा गाँव में श्री दशरथभाई नाथुजी चौधरी के यहाँ पदार्पण।
श्री गोविंदभाई बबलदास गज्जर के यहाँ पदार्पण, घी कांटा।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
ओला गाँव में श्री घनश्यामभाई प्रवीणभाई कोठारी के यहाँ पदार्पण।
गोधावी गाँव में श्री भरतसिंह वाघेला के यहाँ पदार्पण।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पाटोत्सव प्रसंगपर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर धम्रासणा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
कलोल गाँव में श्री दिलीपभाई बारोट के यहाँ पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१७. दिसम्बर से ता. ४-१-११ तक दुबई केन्या नाईरोबी
तथा यु.के. धर्म प्रवास पर पदार्पण।

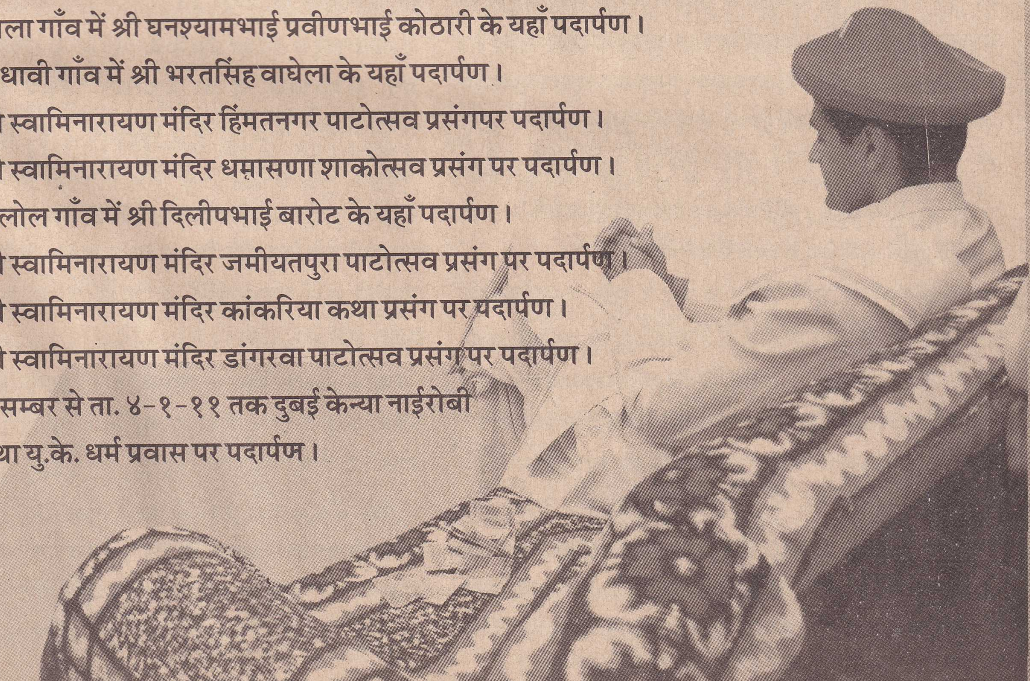

"मूर्ति"

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपनी वैदिक परंपरा में साकार उपासना के लिये मूर्ति पूजा ही श्रेष्ठ बताई गयी है। जो स्वरुप अक्षरधाम में मुक्तों को दर्शन का सुख प्रदान करता है वही स्वरुप मृत्युलोक में मूर्ति के रुप में भक्तों के लिये अंगीकार किया गया है। एकांतिक धर्ममार्ग में उत्तम स्थान प्राप्ति करने के लिये शिक्षापत्री श्लोक १२१ में तत्र ब्रह्मात्मना कृष्ण सेवा मुक्तिश्च गम्यताम् ''प्रभुने बताया है कि भगवान की सेवा भक्ति ब्रह्मरुप होकर करनी चाहिये। यही मूर्ति की उपासना का रहस्य है। मंत्र के माध्यम से धाम में स्थित स्वरुप मूर्ति में आकार प्रतिष्ठित होता है। मुक्ति मात्र मृत्यु लोक में लभ्य है। क्योंकि अन्य लोको में आहवाह, स्थापन, पूजन इत्यादि संभव नहीं है। इसीलिये देवतालोग भी इस धरती पर आने की चाहना रखते हैं। मंत्र-यंत्र-मूर्ति स्व स्वरुप की एकता कराने का माध्यम है। भगवान श्री रामानुजाचार्य ने २५०० वर्ष पूर्व मूर्ति पूजा का विशेष प्रचार किया था।

भक्तिमार्ग में मूर्ति सेवा के लिये मूर्ति सम्बन्धिज्ञान होना आवश्यक है। बजार में बिकती मूर्ति लाकर पूजा करना श्रेयष्कर नहीं है। इस विषय की जानकारी अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने खूब अच्छी तरह से दी है। इसका अनुसरण करने से मूर्ति सेवा के हम पात्र हो जाते हैं। शिक्षापत्री श्लोक ६२ में श्रीहरिने स्पष्ट लिखा है कि जो श्रीकृष्ण स्वरुप अपनी सेवा के लिये पूज्य आचार्य महाराजश्री दिये हों या प्रतिष्ठित किये हो वही स्वरुप पूजा के योग्य है। अन्य स्वरुप पूजने या नमस्कार करने के योग्य नहीं है। मूर्ति पूजा के विषय में कोई भी किसी भी प्रकार का अर्थघटन करता हैं तो ६२ वें श्लोक के आधार पर उसका बहिष्कार करना चाहिये। श्रीहरि के प्रागट्य का उद्देश्य उपासना के स्वरुप का प्रतिपादन करना था। मूर्ति की उपासना-सेवा श्रीहरि की आज्ञानुसार करनी चाहिये। देशकाल की विषमता में अन्य की सहायता ली जा सकती है लेकिन मूर्ति पूजा तो धर्मवंशी आचार्य द्वारा प्रतिष्ठित मूर्ति हो या उनसे प्राप्त मूर्ति हो उसकी उपासना करनी चाहिये। जिस तरह देश का संविधान सुप्रिम कोर्ट के आदेश पर या राष्ट्रपति के आदेश पर नीचे की कोर्ट का आदेश अपने आप परिवर्तित हो जाता है। उसी तरह अन्य मतो की अपेक्षा श्रीहरि की शिक्षापत्री श्लोक ६२ की आज्ञा अन्तिम जजमेन्ट है।

वचनामृत गढडा प्रथम के ४८ वे में लिखा है ''अमारे अने नरनारायण ने तो सुधोमन मेलाप छे। ते अमे नरनारायणने कहींशु जे हे महाराज ! जे पंचवर्तमान मां रहीने अमारी आपेल ने तमारी मूर्ति तेने जे पूजे तेमां तमे अखंड वास करीने रहेजो। माटे तमे सर्वे एम निश्चे जाणजो जे ए मूर्ति ते नरनारायणदेव पंडेज छे। एवुं जाणीने कोई दहाडो मूर्ति अपूज रहेवा देसों मां। ने अमारी आज्ञा छे ते सर्वे दृढकरी ने मानजो।''

मूर्ति पूजा जितनी सरल हैं। उतनी ही सावधानी आवश्यक है वे मूर्तियां कैसी होनी चाहिये या कितनी संख्या में होनी चाहिये ? इसकी जानकारी आवश्यक है, अन्यथा प्रसन्नता से अधिक अपराधहोने की संभावना है। आज कितने हरिभक्त नूतन कार्य करते हैं तो नई कोई चीज देखकर घर में ले आते हैं। कितने मूर्ति भेंट देने वालों को भी यह पता नहीं रहता, जिसका परिणाम भक्तों को

भोगना पड़ता है। घर में मूर्ति का संग्रह ठीक नहीं। अपूजित स्वरुप तथा खंडित स्वरुप नदीं में विसर्जित कर देना चाहिये।

सर्व प्रथम घर की दीवाल पर या तिजोरी के ऊपर मूर्ति नहीं रखना चाहिये । घर के इशान या घर की स्थिति के अनुसार छोटा या बड़ा प्रभु का सिंहासन बनाकर धर्मवंशी आचार्य महाराज द्वारा प्राप्त मूर्ति उस में रखनी चाहिये । सिंहासन पर विराजमन मूर्ति का प्रभाव घर पर पड़ता है। इसलिये दरवाजे पर, बेडरुम में रसोई में या अन्य कहीं भी मूर्ति रखकर सेवा नहीं करनी चाहिये हाँ, लीला चरित्र, मुक्त, संत तथा धर्मवंशी गुरु का स्वरुप रखा जा सकता है। सिंहासन में इष्टदेव तथा श्री नरनारायणदेव को अवश्य रखना चाहिये इसके अलांवा इच्छानुसार पंचदेव को भी रख सकते हैं।

पंचदेव की मूर्ति के विषय में मत्स्यपुराण में लिखा है कि घर में दो शिवलिंग, तीन गणेशजी, दो शंख, दो सूर्य, तीन दुर्गाजी, दो गोमतीजी, दो शालिग्राम की पूजा करने से घर में अशांति या उद्वेग बना रहता है । शालिग्राम स्वरुप की संख्या १, ३, ५, ७ में होनी चाहिये । स्कन्द पुराण में लिखा है कि शालिग्राम की शिला में तथा बाणलिंग की प्रतिष्ठा में आवाहन की आवश्यकता नहीं होती। अन्य प्रतिष्ठा में आवाहन की आवश्यकता हो ती है। वृहत धर्म पुराण के ५७ वें अध्याय में लिखा है कि घर में चल प्रतिष्ठा ही करनी चाहिये। तथा मंदिर में अचल प्रतिष्ठा करनी चाहिये । जब मूर्ति विसर्जन करने का समय आये तब गंगाजल अथवा शालिग्राम स्वरुप में से सभी देवों का आवाहन विसर्जन किया जा सकता है।

आफिस में भी सम्भव हो सके तो एक ही सिंहासन रखना चाहिये । यथा शक्य धूप-दीप-आरती करनी चाहिये।

श्रीमद् भागवत पुराण एकादश स्कंध२७ वें अध्याय तथा १२ वें श्लोक में मूर्तियों का निर्णय बताया गया है कि आठ प्रकार की मूर्ति रख सकते हैं।

''शैली दारुमयी लौही, लेप्या लेख्या च सैकती ।
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविद्या स्मृता ॥''

शैली अर्थात् पत्थर से बनी, दारुमयी अर्थात् काष्ठ निर्मित, लोही अर्थात् धातु, सोना, चांदी, तांबा, पित्तल-इत्यादि मिट्टी-चन्दन की चित्र प्रतिमा, रेती से बनी मनोमयीं (मन की कल्पना ध्यान स्वरुप) तथा मणीमयी (रत्न से बनी) इन आठ प्रकार की मूर्तियों में परब्रह्म स्वरुप का आवाहन किया जा सकता है । लेकिन अन्य वस्तुओं में भगवान के तत्व का आवाहन नहीं करना चाहिये । आजकल फाइवर प्लास्टिक, रबर, सिन्थेटिक जैसे रासायनिक पदार्थों में से मूर्तियों का निर्माण किया जाता है। जो शास्त्र के विरुद्ध है । पर्यावरण की दृष्टि से भी हानिकारक है। ऐसी मूर्ति बनाने वाले, पूजा करने वाले, प्रतिष्ठा करने वाले सभी पाप के भागीदार होते हैं। रसायन में बहुत सारे मिश्रण होते हैं, उनका स्पर्श करना चाहिये या नहीं यह एक प्रश्न है। इसके अलांवा दुनिया में प्लास्टिक का युग छागया है। वे लोग भगवान को भी नहीं छोड़े।

इसके अलांवा कलन्डर्स, दीपावली कार्ड, पत्रिकाओं में भगवान की मूर्ति छापी जाती है, बाद में उन मूर्तियों की कितनी अवदशा होती है यह अपनी प्रत्यक्ष आंखो से देखते है फिर भी भगवान के प्रति भाव क्यों नहीं उठता।

पोकेट कलेन्डर्स जैसी छोटी मूर्तियां पाकेट में रखकर पेन्ट के पीछे वाले पाकीट में रखने वाले लोगों में भगवान के प्रति भाव कहाँ गया ? अब इन पत्रिकाओं - केलेन्डर्स इत्यादि का समय पूर्ण होते ही जहाँ तहाँ फेंक नहीं देना चाहिये, तालाब में विसर्जित कर देना चाहिये। कचरापेटी में नहीं डालना चाहिये या पस्तीवाले को नहीं देना चाहिये। अपनी नित्य पूजा के लिये श्रीहरि शिक्षापत्री के श्लोक ५४ में लिखे हैं कि ''लेख्यार्चा तत् आदरात्'' चित्र मूर्ति की पूजा करनी चाहिये। जो आत्मनिवेदी भक्त हों वे ''शैली वा धातुजा मूर्ति, शालिग्रामोऽर्च्य एव तैः'' पत्थर की धातु की सोने की, चांदी, तांबा या पित्तल से बनाई हुई अथवा शालिग्राम की मूर्ति की पूजा देशकाल के अनुसार तथा यथा सामर्थ्य चन्दन पुष्पादि से करनी चाहिये । वे आत्मनिवेदी भक्त दाहिने हाथ के अंगुष्ठ से लेकर वेंत तक ऊंचाई का प्रमाण मानकर मूर्ति की पूजा करनी चाहिये।

परंतु वशिष्ठ ऋषि के मतानुसार पाषाण की चार अंगुल तथा धातु निर्मित वेंत के प्रमाण जितनी लम्बी मूर्ति का पूजन करना चाहिये। यह नियम स्वकीय पूजा तथा घर की पूजा के लिये है। मंदिर की मूर्तियो का प्रमाण शिल्पशास्त्र में बताया गया है।

शालिग्राम का स्वरुप खण्डित होने पर भी पूज्य है। जो द्विज हैं वे ही इन मूर्ति का पूजन कर सकते हैं। स्त्रियां शालिग्राम की पूजा नहीं कर सकती। शालिग्राम के स्वरुप में आवाहन विसर्जन की आवश्यकता नहीं। चंदन तुलसी से प्रतिदिन पूजन करना चाहिये। रात्रि में तुलसी पत्र उतार लेना चाहिये। तुलसी पत्र के विना भगवान भोग ग्रहण नहीं करते। तुलसीपत्र सुखा भी चढाया जा सकता है। तुलसीपत्र रात्रि में नही तोड़ना चाहिये। स्नान करके मंत्र बोलकर तुलसीपत्र लेने का विधान है।

घर के मंदिर में विराजमान स्वरुप की नित्य आरती तथा भोग की व्यवस्था करनी चाहिये। बाहर गाँव जाने के समय प्रार्थना करके जितने दिन घर वंद हो पूजा न होने पर कोई दोष नहीं है। क्योंकि उसमे चलतत्व का आवाहन हुआ है।

इन्द्र ने ब्रह्माजी से प्रतिमा पूजन का रहस्य पूछा। ब्रह्माजीने कहा शिवजी मंत्र शक्ति से प्रतिमां की आराधना किये तो वे महेश्वर कहलाये। मैं (ब्रह्मा) शैली मूर्ति का पूजन किया जिससे हमें ब्रह्मत्व मिला। वैश्वदेव सैलमयी प्रतिमा, वासुदेव पितल की प्रतिमा, वसुगण कांस्य की प्रतिमा, अश्विनी कुमारो पार्थिव मयी प्रतिमा, वरुणदेव स्फटिक की प्रतिमा अग्निदेव अग्नि की प्रतिमा सूर्य देव गर्मी की प्रतिमा, चन्द्र मुक्तामणी की प्रतिमा मातृका मन वज्रलोहमयी प्रतिमा का यथाशक्ति पूजन-अर्चन किये तो उच्चस्थान को प्राप्त किये।

श्रीमद् भागवत ११ वें स्कन्द २७ अध्याय २४ वें श्लोक में कहा है कि भगवान का तेजोमय अंश मेरे हृदय में है। जीव उनकी कला है, ऐसा दिव्यस्वरुप हृदय में विराजमान रहता है। इस परब्रह्म स्वरुप के मूर्ति की कल्पना को धारण करके मानसी उपचार पूजा करनी चाहिये। इस के साथ, अस्त्रों की, मुक्तों की वस्त्रालंकारों का ध्यान करना चाहिये।

श्लोक ५२ वे में भगवान श्रीकृष्ण ने उद्धवजी से कहा कि मेरी मूर्ति की प्रतिष्ठि करने से पृथ्वी के चक्रवर्ति का राज्य, मंदिर के निर्माण से त्रिलोकी का राज्य तथा पूजा इत्यादि की व्यवस्था करने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। जो ए तीनो सत्कर्म करता है उसे मेरे ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

नूतन वर्ष के मंगलदिवस पर प.पू. महाराजश्रीने पदार्पण किया था

श्री नरनारायणदेव तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के प्रति अनन्य निष्ठावान हमारे प.भ. वसंतभाई त्रिभोवनदास टांक परिवार के घर पिछले कई वर्षों की तरह इस बार भी उनके निवास स्थान पर पदार्पण करके खूब आशीर्वाद दिये थे।

श्री नरनारायणदेव को वे प्रतिवर्ष शुद्ध दान भी प्रदान करते हैं। धन्य है ऐसे हरिभक्तो को।

रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज के रजत शताब्दी पाटोत्सव के विषय में जानकारी

संप्रदाय में प्रथम अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रतिष्ठापित सर्वावतारी सर्वोपरि इष्टदेव श्री घनश्याम महाराज का "रजत शताब्दी महोत्सव" १२५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव फाल्गुन शुक्लपक्ष-१ ता. ६-३-२०१०० के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन महोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा। इस प्रसंग में यजमान पद का लाभ लेने हेतु पू. महंत स्वामी या पुजारी स्वामी का संपर्क करने के लिए निवेदन है।
(पुजारी ज्ञानप्रकाशदास, रंगमहोल)

कलंक न कोई कुं लगात

- शास्त्री स्वामी अभयप्रकाशदासजी
गुरु स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

स्वामी प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उतारने लायक आठवें नियम की वात कर रहे हैं। ''कलंक न कोई कुं लगात। कभी किसी को किसी प्रकार का मिथ्यापवाद नहीं लगाना चाहिये। ऐसे तो नहीं अपने स्वार्थ के लिये भी किसी में झूठा आरोप नहीं लगाना चाहिये।

भगवान स्वामिनारायण शिक्षापत्री के २० वें श्लोक में कहते हैं कि -

मिथ्यापवादः कस्मिंश्चिदपि स्वार्थस्य सिद्धये।

नारोप्यो नाप शब्दाश्च भाषणीयाः कदाचन ॥

अपने स्वार्थ के लिये भी कभी किसी को मिथ्या अपवाद नहीं लगाना चाहिये।

कितनी बार यह देखने में मिलता है कि दूसरे की प्रगति दूसरे से देखी नहीं जाती है। ईर्ष्या के कारण दूसरे पर आरोप लगाता है। इससे दोनो की प्रगति बाधित होती है। सम्भव हो तो प्रगति में सहायक होना चाहिये।

शास्त्रो में मिथ्यापवाद को सबसे बड़ा पाप बताया गया है। आदित्य पुराण में लिखा है कि ''जिसके ऊपर झूठा आरोप कोई लगाता है उसके पुत्र - पशु सभी मरजाते हैं। हत्या, सुरापान, चोरी, तथा गुरुपत्नी के साथ गमन का भयंकर प्रायश्चित बताया गया है। इसलिये किसी पर मिथ्यापवाद लगाने का प्रयास भी नहीं करना चाहिये।

उपपुराणमें कहा गया है कि - एक बार चार ब्राह्मण काशी से पढ़कर वापस आ रहे थे। वे सभी चलते हुये एक गाँव में पहुंच गये। दोपहर का समय भूख; लगी हुई थी। कुछ लोगों से उन्होंने पूछा, भाई हमें भीक्षा लेनी है, आप इस गांव में किसी सज्जन को बतायेंगे ? उनलोगो ने कहा जो सामने दिखाई दे रहा है वह पटेल का घर है, वे बड़े सज्जन पुरुष है। वे ही आप सभी को उत्तम भीक्षा दे सकते हैं। ब्राह्मण पटेल के घर गये। पटेल ने भी ब्राह्मणों को घर आया देखकर उत्तम स्वागत किया। उसने पूछा आप लोग कहाँ से आ रहे हैं ? ब्राह्मणों ने उत्तर दिया हम सभी काशी से विद्याभ्यास करके आ रहे हैं। अब अपने घर जा रहे हैं रास्ते में भूख लगी तो आपके यहाँ भीक्षा मांगने आये हैं। यह सुनते ही पटेल खूब प्रसन्न हो गया। अपने को सद्भागी मानने लगा। आप जैसे पवित्र ब्राह्मण आज हमारे घर भीक्षा मांगने आये। आप सभी आराम करें थोड़े समय मे ही रसोई तैयार करवाता हूँ। ऐसा कहकर वह रसोई की तैयारी करने लगा। भोजन में खीर-पूड़ी की तैयारी होने लगी। पत्नी दूधलेने के लिये गयीं लेकिन दूधपाक का ढक्कन जल्दी के कारण ले जाना भूल गयी। हुआ ऐसा कि जब वह दूधलेकर वापस आ रही थी उसी समय चील्ह पक्षी अपने मुख में सांप को लेकर आकाशमार्ग से जा रहा था। संयोगवश उस सांप के मुख से जहर का बिन्दु उसी दूधपात्र में आकर गिर गया, लेकिन पटेल की पत्नी को इसका ख्याल नहीं आया। वह दूधलेजाकर खीर बनाई। अब ब्राह्मणो को खीर-पूड़ी भोजन में बड़ी श्रद्धा के साथ दोनों खिलाते हैं। लेकिन ज्योंहि मुख में खीर जाती है और उस जहर का असर उन ब्राह्मणों पर पड़ता है, चारों वहीं पर पंचत्व को प्राप्त हो जाते हैं। यह समाचार पूरे गाँव में फैल जाता है। सारा गाँव एकत्रित हुआ। अब उनकी स्मशान क्रिया के लिये उन्हें स्मशान पर ले गये। लेकिन यमलोक में चित्रगुप्त चिन्तन में पड़ गये कि ब्रह्म हत्या का पाप किसके नाम पर लिखें। यमराज के पास गये और उनसे पूछे कि यह पाप किसके नाम लिखना है। यमराज ने कहा पटेल की पत्नी के नाम। इसमें पटेलानी का क्या दोष ? तो चील्ह के नाम लिखो। उसका क्या दोष वह अपना आहार लेकर जा रही थी। दोनो विचार में पड़ गये। भगवान के पास गये। सम्पूर्ण स्थिति बताये। अब तीनो मिलकर पृथ्वी पर आये। उसी गाँव में गये। जिस तरह ब्राह्मणों ने गाँव के लोगों से भीक्षा की बात की थी। उसी तरह इन लोगों ने की। उन सभी ने भीक्षा के लिये उन्ही गृहस्थ का घर बताया। अभी उन पति-पत्नी ने भीक्षा देकर चार ब्राह्मणों को ऊपर भेंज दिया। जब इस तरह उन सभी ने कहा तब भगवानने चित्र गुप्त से कहा कि यह पाप इन दुष्टों के नाम लिखो। चित्रगुप्त ब्राह्मणों के पाप को उन ग्रामजनों के नाम लिखा।

इसलिये शास्त्र में लिखा है कि मिथ्या आरोप किसी को नहीं लगाना चाहिये। किसी के भीतर कोई दोष हो तो भी उसे प्रकाशित नहीं करना चाहिये।

धनुर्मास

– साधु घनश्यामप्रकाशदासजी – जमीयतपुरा (महंत माणसा)

पौष महीने में जब प्रचंड ठन्ढी पड़ती रहती है उस समय सम्पूर्ण सत्संग समाज भक्ति के रस में डूब जाता है।

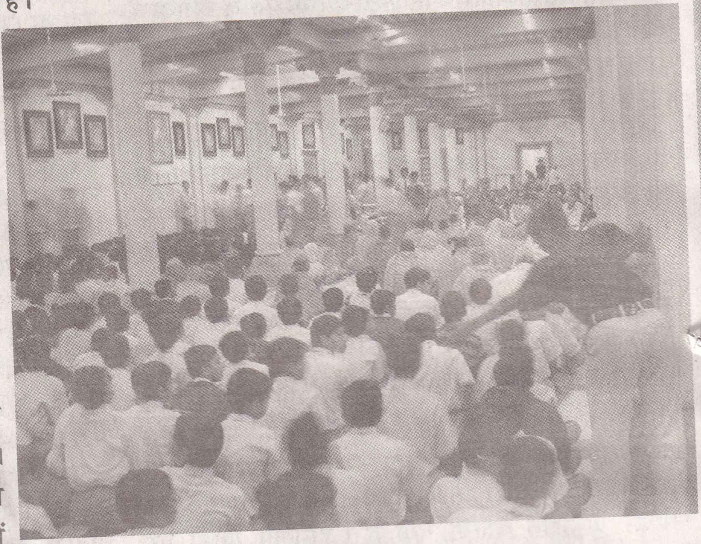

भगवान श्री कृष्ण इसी शिशिर कालीन समय में गुरु सांदीपनी के आश्रममें विद्याभ्यास के लिये पधारे थे। गुरुभाईयों के सहवास में रहकर गुरु की सेवा करके जगत के प्राणीमात्र को मोक्ष प्राप्ति का तथा सद्‌विद्या प्राप्ति का उत्तम मार्ग बताया है। भक्त भी प्रभु के बताये गये मार्ग पर चलने का संकल्प लिया, जिसका परिणाम आज हम अपने मंदिरो में देखते हैं। लोग प्रातः कालीन सुखदनींद का आनंद छोड़कर ठन्डे जल से एकमास पर्यन्त स्नान करने का नियम लेते हैं। नित्य नैमित्तिक पूजा-पाठ इत्यादि विधिको पूर्ण करके मंदिर में मंगला आरती में सम्मिलित हो जाते हैं। जनमेदिनी प्रातः काल उमड़ उठती है। सुन्दरगीत वाद्य से वातावरण सुरम्य हो जाता है। इस अवसर पर श्रीहरि भी ऐसे वातावरण में हरिभक्तों के प्रेम में मग्न हो जाते हैं।

श्रृंगार आरती के बाद प्रभु को सर्व प्रथम भोजन कराकर विद्यालय भेंजने की लालसा सभी के मन में लगी रहती है। प्रतिदिन नूतन वस्त्राभूषण पहनाकर हाथ में पाठ्य पुस्तक देकर, पट्टी पर सुवाक्य लिखकर प्रभु के हाथ में दिया जाता है। इसके अलांवा विद्यालय में साथ ले जाने के लिये नये नये पक्वान्न बनाकर प्रभु का भोग लगाया जाता है।

इस तरह प्रत्येक मातायें वात्सल्य भाव से श्रीहरि की पूर्व लीलाओं का स्मरण करके उनकी भक्ति में तरबोर हो जाती है। पूरे महीने दानपुण्य का सिलसिला चालू रहता है। "कोई गाय को चारा डालता है तो कोई पक्षियों को दाना डालता है। कोई गरीबो को ऊनका वस्त्र दान देता है। कोई अन्नदान करता है। श्रीमान् धनपती लोग स्कूल के वच्चों को भोजन कराते हैं। कोई वृद्धाश्रम में भोग कराता है। कुछ लोग साधु-सन्तों को उनके मन के अनुकुल भोजन कराते हैं। भोजन कराकर साल तथा दक्षिणा भी देते हैं। सर्वत्र दान की धारा बहाकर स्वयं एक समय भोजन करने वाले दानी लोग श्रीहरि की भजन में एक मास दत्तचित्त रहते हैं। जगह-जगह पर पारायण, शाकोत्सव हरिचरित्रामृत की कथा होती रहती है। सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के दरबार में तथा छोटे-बड़े सभी मंदिरो में धनुर्मास के समय प्रातः कालीन धुन तथा कथा होती रहती है। इससे पूरा वातावरण दिव्य हो जाता है। ऐसा अन्यत्र कहीं देखने में नही मिलता। करोड़ो के मुख से श्री स्वामिनारायण महामंत्र की रटन एक घन्टे तक सतत होते रहने से समग्र ब्रह्मांड डोलने लगता है। इस तरह यह धनुर्मास बारह महीने की आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करने के लिए एक वर्ष से लोग राह देखते रहतें हैं।

इस तरह हम भी इस आनन्दमय वातावरण का हार्दिक स्वागत करे तथा उसी में ओतप्रोत हो जांय।

प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वचन में से अविस्मरणीय वात

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, बापूनगर द्वारा आयोजित १००८ समूह महापूजा की सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा समापन के समय प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। उस समय प.पू. महाराजश्री ने दान भेंट के विषय में बताया कि कुछ वर्ष पूर्व प.पू. बड़े महाराजश्री एक समय जमशेदपुर पधारे थे । एक समृद्ध हरिभक्त के यहाँ निवास किये। उस हरिभक्त के घर अढड़क सम्पत्ति थी। प.पू. बड़े महाराजश्री सामान्य ढंग से पूछे कि आप का धन्धा क्या है। उस हरिभक्तने बताया कि मेरा बहुत बड़ा बिजनेश नहीं है। परंतु यहाँ की टाटा कंपनी जो गाड़ी बनाती है उस पर जो ''टी'' सेम्बल लगता है वह मैं बनाता हूँ। यहाँ इस उदाहरण से यह समझना है कि एक सामान्य व्यक्ति एक बड़ी कम्पनी के साथ जुड़ता है और इतनी सम्पत्ति हो सकती है तो भक्तजनों आप लोग अपनी आवक का दशांश-वीशांश दान भेंट श्रीहरि की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव के चरणों में अर्पित करें तो उनके जीवन में कितनी समृद्धि होगी ? महाराज के साथ मात्र २% की भागीदारी में कितनी बड़ी प्राप्ति है । दानभेंट सीधा महाराज के पास प्राप्त होता है। जबकि अन्य दान साक्षात् नहीं मिलता। नरनारायणदेव की आफीस में कितना दान भेंट लिखवाते हैं, उसका महत्व नहीं है । सबसे बड़ी बात नियमितता की है । प्रतिदिन हम सभी महाराज की पूजा तो करते ही हैं। परन्तु इस तरह की महापूजा वर्ष में एकबार अवश्य करनी चाहिये। इस महापूजा के माध्यम से महाराज का स्मरण स्थाई बना रहता है । जो भी इस महापूजा में प्रत्यक्ष या परोक्ष भाग लिये हैं, वे धन्यवाद के पात्र है। प.पू. बड़े महाराजश्री ने हरिभक्तों के संकल्प में कितना बल है। इसका एक प्रसंग है - एकबार हम अमेरिका से भारत आ रहे थे उस समय मुझे विदा करने के लिये बड़ी संख्या में हरिभक्त एरपोर्ट पर आये हुये थे । मेरे साथ

अहमदाबाद के महंत शास्त्री स्वा. हरिकृष्णदासजी भी थे। एरपोर्ट पर आये हुये हरिभक्तों में सौराष्ट्र के गोसलीया परिवार का एक बालक भी हाथ में गुलाब का फूल लेकर आया था । परंतु हुआ ऐसा कि वह बालक लेट होगया । हम सभी भीतर जा चुके थे । सामान भी प्लेन में रख दी गयी । उस बालक की हार्दिक भावना थी कि पू. महाराजश्री के हाथ में यह गुलाब का फूल देना है । उसी सयम ऐसा हुआ कि महाराजकी इच्छा से एरपोर्ट के सभी कम्प्यूटर बन्द हो गये । केडीयन एरपोर्ट जहाँ से एक साथ अनेकों प्लेन उड़ती थी, वे सभी एक साथ बंद पड़ गयी । सूचना दी गयी कि सभी प्लेन उडान भर नही सकती अतः यात्रा रद की जा रही है। हम सभी बाहर आये, सामान भी बाहर आ गयी । अन्य हरिभक्त विदाई देकर वापस जा चुके थे । परंतु छोटा बलक हाथ में गुलाब का फूल लेकर आंख में आंसू लिये हुये खड़ा था । उसके हृदय की शुद्धभावना महाराज ने सुनी और उसका संकल्प पूरा हो गया । इसके बाद तो हमें दो दिन और अमेरिका रुकना पड़ा था । सत्संगी के एक बालक में इतनी बड़ी संकल्प शक्ति हो सकती है तो यहाँ म्युझियम के उपलक्ष्य में १००८ समूह महापूजा है । इतने हरिभक्त म्युझियम के लिये शुभ संकल्प करे तो महाराज निर्विध्न तथा सुंदर ढंग से कार्य पूर्ण अवश्य करेंगे । आप सभीने आज म्युझियम के कार्य में हमारे मनोबल को और बढा दिया है । महाराज किस तरह प्रसन्न होते हैं हम जानते हैं । वर्तमान में जो भी हरिभक्त म्युझियम के कार्य में लगे है, उन पर महाराज अवश्य प्रसन्न होंगे ।

यहाँ यह उपरोक्त बात से यह प्रमाणित हो जाता है कि प.पू. बड़े महाराजश्री एक बालक के संकल्प को जान सकते हैं वे अपने मुख से कहें या न कहें लेकिन शास्त्र तो यही कहता है कि धर्मवंशी आचार्य महाराज के अपर स्वरुप हैं । श्रीहरिने यह बात अपने मुख से कहकर प्रमाणित किया है । साक्षात् स्वामिनारायण भगवान आचार्य स्वरुप में विमान में विराज हो चुके थे, उसी समय एक बालक की शुद्ध भावना के प्रेम वश होकर कम्प्यूटर बन्द पड़ने के निमित्त से एरपोर्ट पर वापस आये । निमित्त बनाने वाले भी स्वयं सर्वावतारी श्रीहरि हैं। पुरुषोत्तम प्रकाश में लिखा है कि -

अमे एमां ए छे अम मां इ रे,
एम समझो सहु बाई भाई रे ।
एथी अमे अलगा न रैये रे,
एमां रही ने दर्शन दैये रे ॥

धर्मवंशी आचार्य श्री के जीवनमें इस प्रकार की कितनी घटनायें वनती रहती है । परंतु संयोगवश हम सभी को सुनने के लिये उनके मुख से कभी कभी संभव हो पाता है । श्रीहरि जब इस पृथ्वी पर मनुष्यरुप धारण करके विचरण कर रहे थे उस समय भक्तों के शुभ संकल्प को जानकर अन्तर्यामी रुप से पूर्ण करते थे इसका अनेको उदाहरण शास्त्रों में मिलता है । आज भी यह परंपरा चालू है।

हमारे आगामी उत्सवों की यादी

माघ शुक्लपक्ष-५ : वसंत पंचमी दि. ८-२-२०११ मंगलवार श्री शिक्षापत्री जयंती, मूली मंदिर पाटोत्सव का उत्सव ।

माघ शुक्लपक्ष-८ : दि. ११-२-२०११ शुक्रवार को टोरडा श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव ।

माघ शुक्लपक्ष-१० : दि. १३-२-२०११ के रविवार नारणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव ।

माघ शुक्लपक्ष-१२ : दि. १५-२-२०११ के मंगलवार धरियावद श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव ।

माघ शुक्लपक्ष-१४ : दि. १७-२-२०११ के गुरुवार वासणा (अहमदाबाद) श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव ।

गुरु मंत्र - दीक्षा महोत्सव

जेने जोईये ते आओ मोक्ष मांगवा रे लोल।

आजे धर्मवंशी ने द्वार, नरनारी जेने जोईये ॥

खाखरिया देश के सभी सत्संगी भाई बहन को उद्धव संप्रदाय की नीति-रीति समझ लेनी चाहिये इसके साथ गुरुपरंपरा को जानता आवश्यक है। गुरु परम्परा कैसी है ? गुरु मंत्र की महिमा क्या है ? श्रीजी महाराज धर्मकुल की स्थापना किये है। उस पद की गरिमा क्या है ?

श्रीकृष्ण भगवान के अनन्य भक्त उद्धवजी अयोध्या में पिता अजय तथा माता सुमति से उत्पन्न हुये थे। बड़े होने पर वे माता-पिता की आज्ञा लेकर गृह त्याग किये थे। साक्षात भगवान का दर्शन करा सके ऐसे गुरु की खोज में श्रीरंग क्षेत्र पहुंच गये । वहीं पर रामानुजाचार्यश्री से भेंट हो गयी। उन्हीं से वैष्णवी दीक्षा लेकर सच्चे गुरु के रुप में स्वीकार किये। अनेक समस्या के बाद भंगवान कृष्णा का दर्शन हुआ । रामानुचाजार्यजी की कृपा से दर्शन सम्भव हुआ । इसीलिये श्रीहरिने वडताल के वचनामृत १८ वें में कहा है कि "उद्धव ते रामानन्द स्वामी रुपे हता" । वही रामानंद स्वामी श्रीरंगक्षेत्र में साक्षात् रामानुजाचार्य से वैष्णावी दीक्षा प्राप्त किये थे रामानंद स्वामी के गुरु रामानुजाचार्य हैं तथा हम रामानंद स्वामी के शिष्य हैं।

इस संप्रदाय की धर्मधुरा किसे सौंपे ? इसलिये बड़े-बड़े संत तथा हरिभक्तों के साथ लम्बा विचार करके धर्मदेव के कुल में रामप्रतापभाई तथा ईच्छारामभाई के एक-एक पुत्र अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरप्रसादजी को दत्तक पुत्र लेकर बड़ा उत्सव करके सत्संग का दो विभाग किया । दक्षिण विभाग उत्तर विभाग । उत्तर विभाग श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान, दक्षिण विभाग - श्री लक्ष्मीनारायणदेव गादी संस्थान बनाकर प्रथम क्रम से अयोध्याप्रसादजी महाराज तथा रघुवीरप्रसादजी महाराज को गादी पर बैठाकर त्यागी-गृही के गुरु के रुप में प्रतिष्ठित किये। इन दोनों को अपने-अपने धर्म में रहकर भक्तिमय जीवन जीने का उपदेश किये। देश विभाग का लेख लिखकर भविष्य में जब तक सूर्यचन्द्र रहेंगे तब तक उद्धव संप्रदाय की प्रगति होती रहे इसलिये उत्तम व्यवस्था करके उद्धोषणा किये कि मेरे द्वारा प्रतिष्ठित देव तथा आचार्य के आश्रय में रहकर तथा मेरे द्वारा रचित-मेरी स्वरुप ऐसी शिक्षापत्री की आज्ञा में जो वर्तन करेगा, उसका हम आत्यन्तिक

कल्याण करेंगे । संत समाज को भी आज्ञा किये और हरिभक्त समाज को भी आज्ञा किये कि यह हमारा पवित्र धर्मकुल है इसकी महिमा जानकर उस परंपरा के आचार्य की आज्ञा में जो रहेंगे उन्हें हम अपने धाम में लेजायेंगे"। आचार्य को भी ऐसी आज्ञा किये कि आचार्य भी अपने नीति-नियम में रहेंगे । सत्संग की मर्यादा में रहर गद्दी की व्यवस्था सम्हालने की आज्ञा की । तथा शरण में आये हुये मुमुक्षु हरिभक्तों को गुरु मंत्र देने की सुन्दर कल्याण कारी रीति की एक परम्परा बनाये ।

तथा समस्त सत्संग समाज को सूचित किये कि मेरे द्वारा स्थापित गादी का जो वफादार रहेगा तथा गादी के आचार्य द्वारा मंत्र दीक्षा प्राप्त करेगा उसका कितना बड़ा भी पाप होगा वह जलकर भष्म हो जायेगा । अंत में मैं उसे अपने धाम में लेजाऊँगा । आचार्य पद सम्प्रदाय के लिये मूल श्रोत है । इन्ही से सत्संग को पोषण मिलता है।

इसी तरह आचार्य पद की गरिमा स्वमुख से वर्णन किये है । मुमुक्षुजीवात्माओं के कल्याण के लिये अनेक उपाय बताये हैं । लेकिन आचार्य पद की स्थापना यह अन्तिम उपाय है । इससे असंख्य जीव भवसागर पार कर सकते हैं । अन्त में श्रीजी महाराज ने कहा हि "जेवुं अमारुं कुल मनाशे रे, तेने तुल्य बीजु केम थाशे रे । माटे विचारीने वात कीधी रे, घणुं समजीने गादी दीधी रे ॥

इसी तरह स्त्री हरिभक्तों के लिये आचार्य धर्मपत्नी को "गादीवाला" का नाम देकर उन्हें भी आचार्य पद जैसी गरिमा का स्थान दिये । आचार्य पत्नी आचार्य की आज्ञा से स्त्रियों को गुरु मंत्र दे सकती है । ऐसे कलिकाल में अलौकिक व्यवस्था करके देव, आचार्य, संत, हरिभक्त ए सभी एक परिवार की तरह आत्मीयभाव से रहेंगे तो अक्षरधाम की प्राप्ति कर सकेंगे । एक दूसरे की महिमा समझना आवस्यक है । इसी परिप्रेक्ष्य में मेडा गाँव के आंगन में आनंद प्राप्त कर सकते हैं । लेकिन इतना याद रखना कि गुरु मंत्र के विना भक्ति से यथार्थ फल की प्राप्ति नहीं होती । कल्याण में कमी रह जायेगी जब गुरु मंत्र नहीं लेगें ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, मु. डेला ता. कडी
प्रेषक : आपका दर्शनाभिलाषी सत्संग सेवक

कार्यक्रम की रुपरेखा

ता. २३-१-२०११ रविवार

१. जपयज्ञ : प्रात ७-०० से ९-०० बजे तक
२. समग्र धर्मकुल स्वागतोत्सव : ९-०० बजे
३. प्रासंगिक सभा, प्रवचन, गुरुमंत्र : १०-०० से १२-०० बजे तक
४. महाप्रसाद : १२-०० बजे के बाद

गुरुमंत्र महोत्सव में धामोधाम से नीचे के संत पधारेंगे ।

१. स.गु.महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, अहमदाबाद
२. स.गु. स्वा. धर्मप्रकाशदाजी, जयदेवपुरा
३. स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, अहमदाबाद
४. स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, जेतलपुर
५. स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी, जेतलपुर
६. स.गु.शा.स्वा. आनंदप्रियदासजी, महादेवनगर
७. स.गु.स्वा. देवप्रकाशदाजी, नारायणघाट
८. स.गु. शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी, नारायणपुरा
९. स.गु.शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी, जमीयतपुरा
१०. ब्रह्मचारी पु.स्वामी राजेश्वरानंदजी, अहमदाबाद
११. स.गु.स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, सुरेन्द्रनगर

महोत्सव में सेवा करने वाले हरिभक्त

श्री भीमजीभाई भगवानदास पटेल परिवार

१. श्री रतिलालभाई खीमजीभाई, ह. केतनकुमार
२. श्री अधोवजीभाई जादवजीभाई, ह. महेन्द्रभाई
३. श्री गोविन्दभाई खीमजीभाई, ह. शरदभाई
४. श्री जयंतभाई मणीलाल, ह. जयकुमार

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

श्रद्धा से सबकुछ मिलता है

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

निःस्वार्थ संत का सत्संग मिलना बड़ी बात है। जिसके हृदयमें भगवान के भक्त के प्रति सद्भाव हो ऐसे संत का सत्संग करना। उन्हीं के वचन को मानना। मंदिर मोक्ष का स्थान है। ऐसे मंदिर के साथ जीव को लगाये रखना चाहिये। यह दोनो का मिलना परमात्मा की प्राप्ति के समान समझना चाहिये। लेकिन अपने में श्रद्धा होनी चाहिये।

श्रद्धा परिवर्तन की चीज नहीं है। आज यहाँ कल वहाँ। जिसने भगवान पर श्रद्धा रखी है उसकी सभी बात भगवान सुनते हैं।

भगवान स्वामिनारायण कहते हैं कि रामायण में भगवान श्री राम का वचन है कि माता जिस तरह अपने बच्चे को रखती है ठीक उसी तरह विश्वास करने वाले भक्त को भगवान रखते हैं। उन्हीं में मन स्थिर रखने से सद्गुण अवश्य आयेंगे। रेल में बैठकर आपको मुंबई जाना है वह पांच बजे की जगह लेट भी हो सकती है, उसमें श्रद्धा हो तो वही ट्रेन आपको पहुँचायेगी, यदि आप उतर गये तो कभी नहीं पहुंचेगे या परिवर्तित कर दिये तो भी गड़बड़ होने की संभावना है। इसी तरह भगवान में श्रद्धा कभी निष्फल नही जाती। याद रखना श्रद्धा तथा शंका दोनो कभी साथ नहीं रह सकते। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि - ''श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्''

श्रद्धाज भारी लई गई, मंजिल ऊपर मने ॥
रस्तो भूली गयो तो दिशाओ फरी गयी।''

श्रद्धावान से क्या नहीं हो सकता ? एक महात्मा के आश्रम में शिष्य आया। उसने पूछा कि इस लोक में शान्ति तथा परलोक में मोक्ष कैसे मिलेगा ? महात्माजीने कहा कुछ समय के बाद बतायेंगे। वह शिष्य महात्मा के पीछे पड़ गया। आप जल्दी उत्तर दीजिये। महात्माने कहा जब मैं अकेले रहूंगा तब तुम्हे बताऊँगा। अब वह शिष्य जहाँ स्वामीजी जांय वहाँ पीछे-पीछे होलेता। दूसरे दिन महात्माजी कहीं बाहर जाने को निकले, वह शिष्य पीछे-पीछे चल दिया। महात्माजी गरम होकर कहने लगे तूं तीन दिन से मेरे पीछे पड़ा है रुक तूं ऐसा कहकर उसके ऊपर एक पत्थर का टूकडां फेंके। भाग यहाँ से। अब वह शिष्य उस पत्थर के टुकड़े को लेकर भागा। उसके मन में हुआ कि इसी से मुझे शांति तथा मोक्ष मिलेगा। उस पत्थर को लेकर वह घर आया। ''वह शिष्य पत्थर को घर लाकर प्रतिदिन बड़ी श्रद्धा से पूजन-अर्चन करने लगा। किसी किसान ने पूछा हम बड़ी आपत्ति में हैं कुछ उपाय ? उसने बताया कि इन देखाड़ेश्वर महादेव की मान्यता रखो। उसने ऐसा ही किया भगवान की इच्छा से वही सुखी हो गया। इसी तरह दूसरे तीसरे ने रखी अब प्रचार हो गया। कितने लोग लाखो पति हो गये निःसंतान संतान वाले हो गये। अब वे सभी प्रसन्न होकर धर्मशाला-मंदिर इत्यादि का निर्माण करवाकर संचालन की व्यवस्था भी कर दिये। अब उसकी इतनी मान्यता हो गयी कि लाइन लगने लगी। प्रातः सायम् आरती-पूजन पाठ होने लगा।

उस नवयवुक के गुरुरुप में महात्माजी एकबार अपने शिष्यों के साथ यात्रा करने निकले। साथ में कुछ गृहस्थ शिष्य भी थे। यात्रा करते हुये स्वामीजी उस मंदिर में पहुँच गये। वहाँ पर रहने खाने की व्यवस्था अच्छी है। महात्माजी मंदिर में मूर्ति को प्रणाम करने गये। लेकिन मंदिर में तो कोई मूर्ति नहीं थी। यहाँ माताजी, राम, कृष्ण इत्यादि कोई नहीं ?

पत्थरेश्वर महादेव का पुजारी बाहर आकर देखा तो वही स्वामीजी ? ओहोहो ! ये तो हमारे गुरुदेव पधारे हैं। वह सामने दौड़कर गया और उनके चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा, इन्ही की कृपा से हम आज सुखी हुये हैं। आप की कृपा से सुख-शांति तथा मोक्ष मिल गया है।

यह सुनकर महात्माजी को बड़ा आश्चर्य हुआ। शिष्य ने बताया कि जो कुछ सुख सुविधा मंदिर धर्मशाला देख रहे हैं यह आपके आशीर्वाद का फल है। हमें मोक्ष भी मिल जायेगा। महात्माजी कहने लगे जो भी इस तरह गुरु के वचन में श्रद्धा रखेगा या शास्त्र के वचन में श्रद्धा रखेगा उसका जीवन सुखी होगा। वचनामृत में कहा है कि सुख, समृद्धि, ज्ञान, वैराग्य तथा मोक्ष की प्राप्ति श्रद्धा से होती है। हमे भगवान स्वामिनारायण में श्रद्धा रखनी चाहिये।

प्रतिदिन श्रद्धा से भजन-भक्ति-दर्शन कथा श्रवण करनी चाहिये । भगवान स्वामिनारायण प्रत्यक्ष हैं । उनमें श्रद्धा होतो कौन सी वस्तु अलभ्य है ?

•

क्षण भरके सत्संग का प्रताप

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

थोड़ा समय भी सत्संग हो तो जीव तर जाता है । परंतु महिमा समझने वाले कम होते हैं । लेकिन उनके ऊपर कोई आपत्ति आजाती है तब अवश्य महिमा को समझने के लिये भटकने लगते हैं ।

एक शेठ था प्रातः जल्दी उठता था । कहावत है कि ''विद्यावान होने के लिये एक एक क्षण का उपयोग करना चाहिये तथा धनवान होने के लिये एक-एक कण का उपयोग करना चाहिये । उस शेठ की प्रकृति भी कुछ ऐसी ही थी । क्षण तथा कण का उपयोग करता था । शेठ का प्रतिदिन प्रातः भ्रमण का क्रम था । प्रतिदिन नापित से क्षौर कर्म करवाकर स्नान करके अपने व्यापार पर चढ जाता था। इस शेठ को कितने भागीदार सज्जन मिले, तो कितने दुर्जन । इन सभी के साथ शेठ का सम्बन्धअच्छा था । व्यापारी संबंधके कारण कितने भागीदार शेठ की धार्मिक बातों को सुनते, मंदिर भी जाते । आमंत्रण देते तो मान अवश्य देता । लेकिन कुसंगी लोग भी पत्रिका देते सभी के आमंत्रण को मान अवश्य देता लेकिन किसी के कार्यक्रम में नहीं जाता था । जो सज्जन भागीदार थे उन्हें खराब नहीं लगता था । लेकिन दुर्जन भागीदार थे वे बदला लेने का विचार करते ।

एक दिन शेठ प्रतिदिन की तरह प्रातः भ्रमण के लिये निकला । नदी के किनारे उसकी दृष्टि पड़ी तो एक बगला पानी में चोंच डालकर पत्थर पर चोंच को घिस रहा है । उसी समय एक महात्माजी वहाँ से निकल रहे थे उनकी भी दृष्टि उस बगले पर पड़ी और उनके मुख से एक कविता निकल पड़ी ।

घसत-घसत युं घसत है ले पासान पर पानी ।
क्युं कारण तूं घसत है यह वात हम जानी ॥

महात्मा का यह शब्द शेठ के कान में पड़ा । शेठ प्रसन्न हो गया । कितनी सुन्दर कविता है । शेठ को यह पंक्ति याद रह गयी । वे मन में विचार करने लगे कि बगला क्यों अपनी चोंच घिस रहा था । जैसे धार बना रहा हो ? मछली पकड़ने के लिये न ? शेठ महात्मा के इन शब्दों पर विचार करते हुये बंगले पर पहुँचे वहाँ पर नापित पहले से खड़ा था। नापित को देखर शेठ उसके पास गये, अब वह शेठजीके मुख पर साबुन लगाकर अपने अस्त्रा को पत्थर पर घिसने लगा । यह दृश्य देखकर शेठजी को उस महात्मा की कविता यदा आ गयी ।

घसत-घसत युं घसत है ले पासान पर पानी ।
क्युं कारण तूं घसत है यह वात हम जानी ॥

शेठ की ऐसी कविता सुनकर नापित कांपने लगा । हाथ से अस्त्रा गिर गया । नापित को शेठ बड़े आश्चर्य से देख रहे थे । आज यह मुझसे इतना डरा क्यों लग रहा है ? इतने में नापित शेठ के चरण में गिर कर रोने लगा । शेठ मुझे मांफ करो । मैं लालच में आ गया था ।

शेठ को आश्चर्य हुआ, उन्होंने कहा यह क्या कह रहे हो । यद्यपि शेठ इस बात से अज्ञात था । लेकिन नापित यह मान रहा था कि शेठ सबकुछ जान रहे हैं । इसलिये वह स्वंय कहने लगा आपके दोनो भाई तथा व्यापारिक सम्बन्धवाले कुछ लोगोंने आपको मारने के लिये रुपये दिये थे । हमें आप माफ करदीजिये ।

शेठ के आश्चर्य की सीमा न रही । यह मैं क्या सुन रहा हूँ। यह नापित मेरी हत्या करने वाला था । लेकिन मैं बच गया । मेरे ही भाई तथा व्यापार के सम्बन्धी लोग जान से मारने की व्यवस्था किये थे । संयोग से मैं बच गया । केवल महात्मा के उन शब्दों ने मुझे बचा लिया ।

यदि एक क्षण भी महात्मा के साथ इतना लाभ कर सकता है तो, जो भगवान की शरणागति करता होगा उसका तो संसार सागर से बेड़ा पार हो जायेगा । ऐसे व्यक्ति का भव दुःख दूर हो जायेगा । अब शेठ के मन में श्रद्धा स्थिर हुई, भक्ति का द्वार खुल गया, शेठ भगवान का दृढ श्रयी हो गया ।

सज्जनो ! सत्संग के विना जीवन में शांति, संस्कार या सद्मुव नही आ सकते ।

विनु सत्संग विवेक न होई । राम कृपा विनु सुलभ न सोई । अति दुर्लभ सतसंग भी भगवान की कृपा के विना संभव नहीं है । इस तरह सत्संग की खूब महिमा है । भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में आज्ञा की है कि प्रति सायंकाल मंदिर में जाना चाहिये । नित्य संतो का सत्संग करना चाहिये ।

शाश्वत सुख

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

यदि हमें शाश्वत सुख प्राप्त करना हो तो स्वामिनारायण संप्रदाय का अनुयायी बनना चाहिये । सभी को ऐसा प्रश्न होता रहता है कि स्वानिरायण के अनुयायी प्राप्यः सभी सुखी रहते हैं, ऐसा क्यों ? भगवान स्वामिनारायण अपने आश्रितों के लिये रामानंद स्वामी से दो वरदान मांग लिये थे । प्रथम, हमारे भक्त अन्न, वस्त्र से सदा सुखी रहें । दूसरा - यदि उनके भाग्य में भीक्षापात्र लिखा हो तो वह दुःख मुझे प्राप्त हो और हमारे आश्रित सुखी रहें । आजतक के इतिहास में इस तरह का वरदान अपने भक्तों के लिये किसी ने नहीं मांगा होगा । किसी ने दिया भी नहीं । जिसे सुखी रहना हो वे महाराज की आज्ञा में अवश्य रहे।

जिन्हे शाश्वत सुख की चाहना हो वे अपना दृष्टिकोण बदल दें । जबतक अपनी दृष्टि में पंचविषय की चाहना रहेगी तब तक उसे जगत की माया ही दिखाई देगी । जिस तरह किसी को पीलिया हो गयी हो उसे सबकुछ पीला ही दिखाई देता है । उसी तरह अपनी वृत्ति में माया का पीलिया रोग हो गया है । इसलिये भगवान के मार्ग में माया अवरोधक बन जाती है । जब विघ्न रुप माया भगवान के मार्ग में अवरोधिका बनती है तब शाश्वत सुख की प्राप्ति असंभव होजाती है । माया का विध्न जब नहीं रहेगा तभी परमात्मा का शाश्वत सुख प्राप्त हो सकता है । दूधमें घी तो होता है लेकिन उसे किस तरह प्राप्त किया जाता है । उसे प्राप्ति करने की रीति न मालुम हो तो घी कभी नहीं निकल सकता । जिस वस्तु में जो भाव है वही प्राप्त किया जा सकता है । बरफ में ठन्ढक है तो ठन्ढक ही मिलेगी । अग्नि में गरमी है तो गरमी ही मिलेगी । इसी तरह भगवान में सुख शांति है, उनसे ही यह प्राप्ति संभव है । लेकिन इसे किस तरह प्राप्त किया जा सकता है - भगवान में जो सुख-शांति है उसे प्राप्त करने के लिये मन की वृत्ति को एकाग्र करके भगवान में जोड़ने से शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है।

जब तक जीवात्मा को परमात्मा की महिमा समझ में नहीं आयेगी तब तक मन परमात्मा में लग नहीं सकता । मन की वृत्ति परमात्मा में लग जाय तो बेड़ा पार हो जायेगा । संत भी यही कहते हैं कि मन को विषम से हटाकर परमात्मा

भक्ति सुधा

में लगाओ शाश्वत सुख मिलेगा । शाश्वत सुख के लिये भगवान का सच्चा भक्त होना पड़ेगा । श्रीजी महारजा की आज्ञा में जीवन होना आवश्यक है । शाश्वत सुख महाराजकी मूर्ति में है।

सुख दो प्रकार का है : (१) लौकिक (२) अलौकिक। (१) लौकिक सुख : क्षणिक, नाशवंत होता है दुःख - सुख का मिश्रण रहता है । (२) अलौकिक सुख - भगवान के धाम की प्राप्ति । स्वर्गादि की प्रापित तो पुण्य जब तक है तभी तक, पुण्य क्षीण होने पर पृथ्वी पर आना पड़ता है । जब कि भगवान का धाम तो अविनाशी - शाश्वत बनाया गया है।

मुक्तानंद स्वामी ने एक गीत गाया है।

"रे ब्रह्मा थी कीट लगी जोयुं,
जुठुं सुख जाणीने वगोव्युं ।
मुक्तानंद कहे मन तम संग मोह्युं,
रे श्याम तमे साचुं नाणुं ॥"

शास्त्रकार भी माया से उत्पन्न सभी पदार्थ को नाशवंत बताये है । अलौकिक सुख भी दो प्रकार का है - (१) स्वर्गादि का सुख (२) भगवान के धान का सुख । अविनाशी धाम की प्राप्ति के लिये सत्संग करना बहुत जरुरी है । सत्संग से ही मन एकाग्र होता है और भगवान मय वृति हो जाती है।

•

भगवान की जो भजन करता है उसकी सभी प्रकार से भगवान रक्षा करते हैं

- वर्षाबहन अरविंदभाई सोनी

एक समय महाराज पांच सौ परमहंसो के साथ विराजमान थे । दो सौ पार्षद थे । संतो की रसोई संतोने तैयारी की, तथा पार्षदों की रसोई आसु बाईने तैयार की । आसु बाई भगवान के ध्यान में जब बैठती तब घन्टों निकल जाता, इतनी भगवत् पारायण थीं । अब पार्षदों के

रसोई की जिम्मेदारी वे ली थी, लेकिन ध्यान में जब बैठ जाती तब रसोई में विलम्ब होता। इस की शिकायत पार्षदों ने महाराज से की कि बाई भोजन बनाने में बहुत विलम्ब करती है। महाराज ने कहा ठीक है मैं देखता हैं। एकवार अक्षयतृतीया के दिन महाराज सभा में विराजमान थे। संत उनकी शरीर पर सुगन्धित द्रव्य का लेपन किये हुए थे। महाराज पीताम्बर धारण किये हुए थे। उस समय उनकी शोभा निखर रही थी।

आसुबाई महाराज का दर्शन करने आयी। महाराज की भक्ति में इतना ओतप्रोत हो गयी कि उन्हें अपना भान ही नहीं रहा। अब उन्हें २-३ घन्टे ऐसे निकल गये। महाराज को ख्याल आ गया कि बाई इस समय ध्यान में अपने शरीर का भान भूल गयी है। महाराज वहां से उस बाई का रुप धारण करके बाई के घर आये, पार्षदों का सम्पूर्ण भोजन बनाकर खिलाये, पार्षदों को इतना स्वादिष्ट भोजन तो आज तक नहीं मिला था। इतना भोजन में मीठापन है। सभी पेट भरकर भोजन किये और वहाँ से अपने निवास स्थान की तरफ जा रहे थे, उसी समय बाई उन्हें मिली, बाई ने कहा पार्षदों ! आज थोड़ी देर हो गयी, अभी मैं आप सभी को भोजन बनाकर खिला देती हूँ। पार्षदों ने कहा अभी आपने ही तो भोजन करवाया है। बाईने कहा नहीं, मैं तो भगवान के ध्यान में बेठी थी, आपको कैसे भोजन कर सकती, अभी आ रही हूँ। नहीं, आपने ही भोजन कराया है।

आसुबाई ने कहा ठीक है, बाद में घर जाकर देखा तो रसोई में भोजन बना है, भोजन करने के बाद कुछ अवशिष्ट भी है। उसे देखकर उन्हे अन्दाज लग गया कि महाराज ही आकर भोजन बनाये और खिलाये। बाई महाराज के पास जाकर पूछी आपने ऐसा क्यों किया। तब महाराजने कहा, जब आप हम में आत्मसमर्पित होगयी तो मेरा कर्तव्य है आपका काम हम करदें। इस तरह जो भगवान की भजन करता है, भगवान उसकी सभी प्रकार से रक्षा करते हैं।

•

रानी झमकुबाई बनी माताजी

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (मेमनगर-अमदाबाद)

उदयपुर - राजस्थान के राजा की रानी झमकुबाई थी। बाल्यकाल से ही सत्संगी हो गयी थी। उनके पति राणाजी उनसे सत्संग छोडवाने का बहुत प्रयास किये। झमकुबाई को अभक्ष्य पदार्थ खाने में देते तथा अन्य प्रकार से भी प्रपीडित करते रहते थे। लेकिन झमकुबाई सदा श्रीहरि का चिन्तन करती रहती थी। अन्त में परेशान होकर बाई के मन में ऐसा विचार आया कि इस पीड़ा से अच्छा तो शरीर का त्याग कर देना ठीक है। इसलिये रात्रि में तीसरी मंजिल पर जाकर छत से कूद गयी। परंतु श्रीजी महारजा उनकी रक्षा कर लिये। महाराज ब्राह्मण का स्वरुप धारण करके आगे चलने लगे, बाई पीछे-पीछे चलने लगी। उस समय गढका दरवाजा अपने-आप खुल गया। बाई वहाँ से भागकर गढपुर के लिये निकल पड़ी। आगे आयी तो एक मरे हुये ऊँट के कंकाल में छिपकर तीन दिन तक बैठी रहीं। उधर दरबार में कोहराम मच गया कि रानी दरबार में नहीं है। सभी उनकी खोज में लग गये। घुड़सवार पीछा करते हुये बहुत दूर तक गये लेकिन वे नहीं मिली तो सभी वापस आ गये। हरिइच्छा से वे बच गयी।

तीसरे दिन ऊँट की कंकाल में से निकल कर चल पड़ी। रास्ते में चलते समय एक नदी आई। वहाँ पर श्रीजी महाराज एक ब्राह्मण का रुप धारण करके आये और बाई से कहे कि आप अशुद्ध स्थान पर रहकर आयी हैं इसलिये इस नदी में स्नान करके शुद्ध होजाइये। बाई ने ऐसा ही किया। स्नान करके आई तो कहा कि आप चार दिन से भूखीं है, मेरे पास सुखड़ी है उसे खाकर सोजाइये। चार दिन से आप सोई भी नहीं है आपकी सभी वस्तुओं की मैं रक्षा करुँगा। उनके सोते ही महाराज उन्हें कारियाणी के दरबार के दरवाजे पर लाकर छोड़ दिये। बाई से कहे कि सामने महाराज रहते हैं वहाँ आप जाइये। बाई वस्ताखाचर के दरबार में गयी, वहाँ जाकर महाराज का दर्शन की। महाराज उन्हें गढ़डा भेंज दिये।

गढ़डा में रहकर प्रतिदिन दरबारगढ में झाडू लगाकर साफ करती थी। इतनी सफाई देखकर महाराजने बड़ी बा से पूछा इनती सुबह में कौन इतनी सफाई करता है। बड़ी बा ने कहा कोई गुजराती महिला है। महाराजने कहा यह गुजराती नहीं है यह उदयपुर की रानी है। इनकी खोज में पूरा राज्य लगा हुआ है। उसी समय भुज से लाधी बा आई

थी । महाराज ने कहा आप इन्हें अपने साथ ले जाइये अपने साथ रखियेगा, इन्हें माताजी कहियेगा । दोनो एक साथ रहते हुये महाराजकी भजन-भक्ति करती रही । अन्त में दोनो ही एक साथ भगवान के धाम में गयी ।

•

सत्संग का सुख

- रमीलाबहन के. मोदी (हिंमतनगर)

सत्संग से ही सुख और शांति मिलती है । जब तक सत्संग में मन नहीं लगे तब तक आनंद की प्राप्ति नहीं होती । चाहे जिस कुल में उत्पन्न हों जब तक परमात्मा की पहचान न हो तब तक मन स्थिर नहीं रहेगा ।

सत्यवान अपने पिता तथा पत्नी सावित्री को साथ लेकर वन में पर्टकुटीर बनाकर रहता था । वहाँ पर नारदजी आये । सत्यवान के पिता ने उनकी पूजा की । पिताने नारदजी से बेटे की आयु के विषय में पूछा । नारदजीने कहा इसकी १२ वर्ष की आयु है । यह सुनकर सावित्री बहुत दुःखी हुई । नारदजी उसे "श्री स्वामिनारायण का मंत्र दिये और कहे कि इससे तुम्हारा कल्याण हो जायेगा । एकवार सत्यवान सावित्र दोनो वन में लकड़ी काटने गये वहाँ पर सत्यवान पेड़ पर चढकर लकड़ी कांटने लगा संयोगवश कुल्हाड़ी उसके पैर में लगी और वह जमीन पर गिर पड़ा । उस समय गिरते ही वह पंचत्व को प्राप्त हो गया । उसके जीव को लेने के लिये धर्मराज आये ।

सावित्री अपने पति का शब लेकर उनके पीछे-पीछे चलने गी, मुख से स्वामिनारायण के नाम की रटन चालू रखी । धर्मराज ने कहा तू वापस जा पति के शरीर का दाह संस्कार करो । सती ने कहा नहीं, मैं भी आपके साथ आउंगी । तुम मेरे साथ नहीं आ सकती । उसने पूछा हे धर्मराज सत्संग की महिमा कितनी ? पृथ्वी की जितनी । पृथ्वी से बड़ा कौन है ? शेषनाग । इससे अधिक कौन ? इससे अधिक भगवान शंकर है । भगवान संकर से बड़ा कौन ? रावण ! रावण से भी बड़ा माता पार्वती है जिन्होंने अपने अंगुठे से पर्वत को दबा दीया और रावण दबा रह गया । उससे पड़ा कौन तो, उससे बड़ा सत्संग है । सत्संग से बड़ा कौन ? वाली ! क्योंकि रावण को वाली ने छ महीने तक अपनी कांख में दबा कर रखा था . वाली से बड़ा कौन? उससे बड़े राम थे । राम से बड़ा कौन ? राम से बड़ा भक्त है क्योंकि भक्त सतत भगवान को अपने हृदय में रखता है - उससे सत्संग होता है ।

सतीने कहा संत के दर्शन से पाप सभी जल जाते है । तो मेरा पाप सब जल गया है । हमें इसका फल मिलना चाहिये । तुम यहाँ से लौट जाओ । अथवा कोई पतिके सिवाय वरदान मांगो । सती ने अपने माता-पिता को १०० पुत्र का वरदान मांगा । धर्मराजने तथास्तु कह दिया । सतीने कहा संत पुरुष के दर्शन के लिये जो जाय उसके प्रत्येक पग में एक अश्वमेधयज्ञ का फल मिले । तथास्थु ।

सतीने कहा मैं पंचाग से आपको प्रणाम करती हूँ आप मुझे वरदान दीजिये । अपने पतिके सिवाय वरदान मांगो । सावित्री ने कहा मेरे सासश्वसुर का पुनः राज्य प्राप्त हो जाय । तथास्तु । एक गाय दोहन जितनी घड़ी तक संत के पति रहने वाले को जितना पुण्य होता है उतना समय तक आपके पास मैं रही हूँ, इसका वरदान हमें दीजिये । पति के सिवाय मांगो । मुझे १०० पुत्र होने का वरदान दीजिये । तथास्तु । धर्मराजाने सती के पुण्य प्रताप से सत्यवान को जीवित किया । यह सत्संग का ही प्रभाव है ।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
छपैया : www.chhapaiya.com
टोरडा : www.gopallalji.com

श्री नरनारायणदेव देश के शिखरी मंदिरो के महंत स्वामीयों के लिये

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव के प्रत्येक शिखरी मंदिरो के फोटोग्राफ्स वेबसाईट पर रखने हेतु प्रत्येक महंत स्वामीश्रीओं को अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर (कोठार) में भेजने के लिए निवेदन है।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास धून का उत्सव मनाया गया

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में ता. १७-१२-२०१० तक धनुर्मास धुन महोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में हजारो संतो-हरिभक्तोने शर्दी में भी धुन का लाभ लेने पधारे थे । पू. महंत स्वामी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत की प्रेरणा-मार्गदर्शन से संत-मंडल तथा कोठार-स्टाफ तथा युवा हरिभक्तों ने प्रेरणादायी सेवा की थी । इस वर्ष मासिक धुन १४०० तथा दैनिक धून ५००० जितनी हो गई थी । मासिक धून करवाने वाले यजमानों को श्री नीलकंठ वर्णी की अेक्रेलीक से बनी हुई अलौकिक मूर्ति स्मृति स्वरुप प्रदान की गई थी । (मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण महोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की शुभ प्रेरणा से ता. १४-११-२०१० से ता. १८-११-२०१० तक श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में अ.नि. सांख्ययोगी रामबाई के पुण्य स्मरण हेतु पुरबाई (माधापर-कच्छ) के मुख्य यजमान पद पर संप्रदाय के युवा कथाकार स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुकुरुल) ने अपनी सुमधुर वाणी में कथा का रसपान करवाकर श्रोता तथा यजमान परिवार को कथा का लाभ दिया था । समग्र प्रसंग का आयोजन कोठारी पार्षद दिगंबर भगत के मार्गदर्शन से जे.के. स्वामी तथा संत मंडलने किया था । (मुनि स्वामी)

वावोल श्री स्वामिनारायण मंदिर

गांधीनगर जिला के वावोल गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से वड़नगर मंहत स.गु. स्वामी हरिसेवादासजी की प्रेरणा से प.भ. पटेल चतुरभाई ईश्वरदास के सुपुत्र प.भ. अनीलभाई चतुरभाई परिवार की तरफ से ता. १८-५-२०१० से ता. २४-११-२०१० तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया था । कथा के वक्ता वड़नगर के महंत स.गु.शा. नारायणवल्लभदासजी ने कथामृत का पान करवाया था । इस प्रसंग पर श्री कृष्ण जन्मोत्सव तथा रुक्मिणी विवाह जैसे प्रसंगो को धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा संत मंडल पधारकर शुभ-आशीर्वाद दिये थे । सहिंतापाठ के वक्तापद पर स.गु. स्वा. श्रीवल्लभदासजी (इसंड) बिराजे थे ।

सभा संचालन शा. विश्वस्वरुपदासजी तथा वड़नगर के पुजारी स्वा. अभिषेकप्रसाददासजीने किया था ।

(शा. नारायणवल्लभदासजी वड़नगर महंत स्वामी)

विहार गाँव भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अ.नि. स्वामी योगेश्वरदासजी (जोगी स्वामी) की दिव्य प्रेरणा से विहार गाँव में भव्य शाकोत्सव ता. ११-१२-२०१० के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ करकमल से धूमधाम से सम्पन्न हुआ था ।

प्रासंगिक सभा में विद्वान संतो में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा सभा संचालन छोटे पी.पी. स्वामी (नाराणघाट महंतश्री) आदि संतो ने प्रेरक अमृतवाणी का लाभ दिया था ।

अंत में सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग के यजमान अ.नि. कचराभाई त्रिभोवनदास परिवार के श्री लक्ष्मणभाई, श्री बाबुभाई (विमावालें) बने थे ।

समस्त सभा में कोठारी श्री मनुभाई तथा समस्त गाँव के हरिभक्तों ने अपनी सेवा दी थी । इस प्रसंग पर नाराणघाट मंदिर से स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा भंडारी सूर्यप्रकाशदासजी आदि संतगण पधारे थे । (शा. चैतन्यस्वरुपदासजी कोटेश्वर)

नारणपुरा टर्फ स्कुल में स्नेह युवा सर्मेलन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के पूर्ण आशीर्वाद से नारणपुरा में टर्फ स्कूल में श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष में एक स्नेह युवा संमेलन मनाया गया था ।

ता. ५-१२-२०१० के रविवार के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में स्नेह युवा संमेलन में अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, पू.स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी, शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी, स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारणघाट महंतश्री), स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, ब्र. पू. स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी आदि अनेक संतो की उपस्थिति में वर्तमान समय के अनुरुप तथा श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन अंतर्गत सेवा के लिये हरिभक्तों को प्रेरणा प्रदान की थी ।

थोड़े समय के लिए दर्शन देने के लिए पधारे प.पू. बड़े महाराजश्रीने संत हरिभक्तो को आशीर्वाद देकर सभी पर प्रसन्न हुए थे । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद प्रदान किये

थे । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री खूब आशीर्वाद दिये थे । हरिभक्तों को नई उर्जा नई हिम्मत मिली थी ।

३००० से भी अधिक परिवार भोजनरुपी प्रसाद का आचमन किया था । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदास)

सोजा गाँव में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

सोला गाँव में प.भ. मंगलभाई जोईताराम पटेल की जीवन चर्या के प्रसंग पर ता. ५-१२-२०१० के दिन एक सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में विद्वान संतो ने प्रेरक अमृतवाणी का लाभ दिया था । अंत में सभी परिवार को प.पू. महाराजश्री आशीर्वाद दिये थे । श्री घनश्यामभाई, श्री महेशभाई, श्री रमेशभाई, श्री अश्विनभाई तथा श्री राकेशभाई आदि परिवारने प.पू. महाराजश्री के दर्शन आशीर्वाद प्राप्त करके धन्य भागी हो गये थे । सभा संचालन तथा अन्य व्यवस्था छोटे पी.पी. स्वामी (नारणघाट महंत) ने संभाला था । गाँव के सभी हरिभक्तों ने इस प्रसंग का सुंदर लाभ लिया था । (शा. अभयप्रकाशदास)

मुबारकपुरा नूतन मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से मुबारकपुरा गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा महामहोत्सव ता. २१-११-१० से ता. २५-११-१० तक धूमधाम से संपन्न हुआ था ।

यहाँ ५० वर्ष पहले मंदिर निर्माण हुआ था । जो अति जीर्ण होते ही नूतन मंदिर निर्माण के लिये संत-हरिभक्तोंने अथग प्रयास करके भव्य मंदिर का निर्माण थोड़े समय में सम्पन्न किया था । प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से मूर्ति प्रतिष्ठा की तारीख निश्चित करके उसके उपलक्ष में श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण, सहिंतापाठ, पारायण, यज्ञ, शोभायात्रा, नगर यात्रा, अन्नकूट, रात्रि कार्यक्रम जैसे सुंदर आयोजन किये गये थे ।

प्रथम दिवस पर सतशास्त्र की पोथीयात्रा धूमधाम से निकाली गई थी । श्रीमद् भागवत कता के वक्ता स.गु.शा. स्वामी रामकृष्णदासजीने सुंदर कथामृतपान करवाया था । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । भिन्न-भिन्न धाम से पधारे संत तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि संतोने हरिभक्तों की सेवा की प्रशंसा की । समस्त बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री बहनो के आग्रह पूर्ण आमंत्रण से पधारे थे ।

श्रीमद् भागवत पारायण में तीसरे दिन कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव को धूमधाम से मनाया गया । गाँव के भी हरिभक्तों द्वारा इस प्रसंग पर रास-गरबा का आयोजन किया गया था । चौथे दिन भावि आचार्य प.पू. श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे । रात्रि में ठाकुरजी की भव्य नगरयात्रा निकाली गयी थी । जिस में श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्ण, श्री घनश्याम महाराज तथा श्री हनुमानजी तथा श्री गणपतिजीकी मूर्तिओं को वाहन द्वारा घर-घर में लेजाकर हरिभक्तों को पूजन-अर्चन का दिव्य लाभ दिया गया था ।

अंतिम दिन मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर ता. २४-११-२०१० के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे तब समस्त गाँव की तरफ से उत्सव-प्रसंग धूमधाम से मनाया गया । सर्व प्रथम प.पू. आचार्य महाराजश्रीने नूतन मंदिर में पधारकर मूर्ति प्रतिष्ठा की संपूर्ण शास्त्रोक्त विधिकरके मूर्ति प्राण-प्रतिष्ठा करके आरती उतारी थी । उसके बाद यज्ञ की पूर्णाहुति की आरती उतारी थी । प्रत्येक प्रकार की सेवा करनेवाले यजमानों को प्रसादी की मूर्ति, प्रसादी का डुपट्टा तथा हार पहनाकर प्रसन्न हुए थे । प्रासंगिक सभा में बड़े विद्वान संतोने आशीर्वाद प्रदान किया था ।

इस प्रसंग की जीवनपर्यन्त स्मृति हेतु अंत में समस्त गाँव के युवानोने व्यसन मुक्ति अभियान में जुड़कर अपने जीवन में व्याप्त-व्यसन-बुरी आदतो को संतगण तथा पू. महाराजश्री के चरण में समर्पित की थी ।

अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री समस्त गाँव को आशीर्वाद दिये थे । पूर्णाहुति के बाद सभीने प्रसाद ग्रहण किया था । इस आयोजन में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, मुबारकपुरा की सेवा प्रेरणारुप थी । मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव के मुख्य यजमान अ.नि. गोविंदभाई नारणदास पटेल परिवार के श्री जनककुमार, श्री नंदुकुमार तथा श्री कमलेशकुमार बने थे । पारायण के मुख्य यजमान प.भ. घनश्यामभाई आदरभाई पटेल बने थे । समग्र महोत्सव का सभा संचालन स.गु. शा.स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारणघाट महंतश्री) तथा स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल)ने संभाला था। (शा. अभयप्रकाशदास)

प्रसादीभूत ओका गाँव में भव्यता से शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी हरिचरणदासजी (कलोल) तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारणघाट महंतश्री) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्रीहरि के पावन चरणों से अंकित पवित्र पुण्यशाली भूमि ओका गाँव में ता. १५-१२-१० के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया था ।

सर्वोपरि इष्टदेव श्रीहरि इस गाँव में २० बार पधारे थे । इतिहास के पन्नों पर यह बात अमर हो गयी थी । तब से ओका गाँव दिव्य धाम बन गया है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने स्वयं अपने हाथों से ठाकुरजी समक्ष सब्जी का दिव्य वघार करके भव्य शाकोत्सव

मनाया गया । उसके बाद प्रसादी के रनतबा के घर दर्शन करने पधारे थे । वहाँ से सीधे सभा में संत मंडल के साथ पधारे थे । सभा में शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) शाकोत्सव के महिमा को हरिभक्तों को बताया था । हरिभक्तोंने श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन में सुंदर सेवा का योगदान दिया था ।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट मंदिर के महंत स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी आदि संतोने पधारकर प्रसंग की शोभा बढ़ाई थी । अंत में प.पू. महाराजश्री समस्त सभा को दिव्य आशीर्वाद दिये थे । उसके बाद सभी भक्तोने दिव्य शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण किया था । समग्र सभा का संचालन पी.पी. स्वामी नारायणघाट महंतश्रीने किया था । (शा. चैतन्यस्वरुपदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजीकी प्रेरणा से तथा महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी के मार्गदर्शन से नाथद्वारा मंदिर के देव का आठवाँ वार्षिक पाटोत्सव, महाभिषेक, महापूजा, अन्नकूट दर्शन आदि धूमधाम से सम्पन्न हुआ था । पाटोत्सव के यजमान पद का असाली के प.भ. शंकरभाई मणीभाई तथा आनंदीबहन के परिवार ने लाभ लिया था । साथ में उनके पुत्र श्री आशिषभाई, बिललबहन, सुपुत्री अल्पाबहन सुधीरकुमार पटेल (महिजडा) तथा काननबहन गौरांगकुमार नटवरभाई पटेल (दहेगाँव) सेवा में रहे थे ।

इस प्रसंग पर राजूभाई शुक्लने महापूजा-अभिषेक करवाई थी । शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजीने प्रासंगिक उद्‌बोधन के साथ सभा संचालन किया था । शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदाजी तथा शा.स्वा. सुखनंदनदासजीने प्रासंगिक वक्तव्य दिया था ।

इस प्रसंग पर मंदिर के मुख्य प्रवेशद्वार 'व्रजेन्द्रद्वार' का उद्घाटन स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजीके वरद् हाथों से सम्पन्न हुआ था । दोनो प्रवेशद्वार के यजमान पद देउसणा वाले प.भ. अनि. दईबहन शंकरदास तुलसीदास पटेल (जीनवाले) परिवार रहे थे । साथ अमृतभाई विष्णुभाई, लालजीभाई, जयरामभाई, जगदीशभाई, कृष्णभाई, सुरेशभाई, नरेशभाई, भरतभाई, शैलेषभाई तथा बिपीनभाई यजमान बने थे ।

पू.शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी, नरेन्द्र भगत, प्रसांत भगत, प्रविणभाई, हेमलभाई, कोठारी जीतुभाई, जयदिप भगत तथा बलदेव स्वामी तथा भरतभाई भावसार फोटोग्राफर आदि तथा विद्यार्थियों की सेवा प्रेरणारुप थी ।(रवि काचा, नाथद्वारा)

नांदोल तथा सलकी गाँव

यहाँ के दोनों श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से दीपोत्सव के प्रसंग पर ठाकुरजी समक्ष भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया था । सत्संगी बहनोने अपने घर से पवित्रता से अन्नकूट बनाने की सेवा की थी । जिसके यजमान प.भ. मनुभाई मोतीभाई पटेल बने थे । नांदोल के अमेरिका में बसते हुए प.भ. भावेशभाई विष्णुभाई पटेल ने सुंदर सेवा की थी । सलकी गाँव श्रीहरि की प्रसादी का अलौकिक गाँव है । हरिभक्तोने ऐसा सुंदर उत्सव करके धन्य हो गये थे ।

(कोठारी विष्णुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बद्रिनारायण में पाटोत्सव पारायण तथा समूह महापूजा

भगवान को अति प्रिय ऐसे हिमालय की चोटी पर स्थापित बद्रिनाथ धाम के हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर में हमारे बहनो की धर्मगुरु प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री के शुभ संकल्प से हमारे दिव्य तथा अलौकिक धर्मशास्त्र श्रीमद् सत्संगिभूषण का पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध वक्ता पूज्य शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ था । यहाँ के महंत स्वामी शा. गोलोकविहारीदासजी ने सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया था । कथा पारायण के साथ निज मंदिर का वार्षिक पाटोत्सव मूल कच्छ के वर्तमान में इन्दौर बसे हुए हरिभक्तों के यजमान पद पर सम्पन्न हुआ था ।

श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से वेदोक्त विधिसे सम्पन्न हुआ था । उसके बाद छप्पन भोग की आरती उतारकर सभा में पधारकर समस्त यात्रिक हरिभक्तो तथा यजमानो को आशीर्वाद प्रदान किये थे । इस प्रसंग पर समूह महापूजा का भी आयोजन किया गया था । जिसके मुख्य यजमान पद का लाभ प.भ. रमेशभाई (टोरड़ावाले) काशीबा परिवारने लिया था । तथा धर्मकुल का आशीर्वाद प्राप्त किये थे । प्रत्येक यात्रिकों को सुंदर व्यवस्था प्रदान की गई थी । धर्मकुल की सेवा में तत्पर पार्षद भगुजी जैसे शूरवीर हजुरी पार्षद वनराज भगतने धर्मकुल की सेवा की थी । इस प्रसंग पर सभी पधारे हुए हरिभक्तों ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम की सुंदर सेवा की थी । महंत स्वामी गौलोविहारीदासजी तथा मथुरा महंत आनंद स्वामीने संत-हरिभक्तो की सेवा में कोई कमी नहीं रखी थी । (तुलसी, रोनक ठक्कर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर २१ वाँ पाटोत्सव

हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर का २१ वाँ पाटोत्सव माग शुक्ल पक्ष-६ को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ । हरिभक्तोंने दर्शन का लाभ लिया । पुजारी अजयप्रकाशदासजीने सुंदर शिंगार किया था । अन्नकूट की आरती उतारकर प.पू. महाराजश्री सभा में पधारे थे । यजमान प.भ. परसोत्तमदास भोलीसा पटेल के परिवार ने प.पू. महाराजश्री की आरती पूजा

करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । ईडर महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजीने सर्व प्रथम प.पू. महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया । प.भ. डॉ. के. के. पटेल साहब के उद्बोधन के बाद महंत शा.स्वा. हरिजीवनदासजीने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उद्घाटन की बाते सभी से की । इस प्रसंग पर ईडर, सोकली, टोरड़ा, प्रांतीज तथा अहमदाबाद आदि स्थानों सं संतगण पधारे थे । आभार विधिस.गु. वासुदेवचरण स्वामीने की थी । अंत में सभीने प्रसाद प्राप्त किया था । (बिपीनभाई पटेल)

प्रबोधिनी एकादशी का जागरण प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से घनश्याम मंडल की ५० बहनोंने प्रातः ४ बजे तक वचनामृत (२७३) जयंती मनाकर ग्रंथ का पूजन आरती की थी । २० बहनोंने वचनामृत पुरःश्चरण की शुरुआत की थी । सभा संचालन लाभुबहन तथा कल्पनाबहनने किया था ।

(संगीताबहन प्रजापति)

डुंगरी में सत्संग सभा

साबरकांठा के ईडर देश में डुगरी गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का धूमधाम से पदार्पण हुआ था ।

प्रसंग के यजमान श्री मोंधाभा जीवाभाई पटेल के घर पू. महाराजश्रीने पदार्पण किया । यहाँ के श्री राधाकृष्ण मंदिर में पू. महाराजश्री आरती उतारकर सभा में पधारे थे ।

विशाल सभा में प्रथम ईडर महंत स्वा. स.गु. जगदीशप्रसाददासजी ने पू. महाराजश्री का हार पहनाकर सम्मान किया था । यजमान परिवारने आरती पूजा करके पू. महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामी तथा पधारे हुए संतोने आशीर्वचन दिये थे । सभा संचालन स.गु. वासुदेवचरण स्वामीने किया था । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री यजमान तथा ग्रामजनों को सत्संग की वृद्धि हो ऐसे आशीर्वाद दिये थे । (पुजारी कपिल स्वामी)

आकरुंद (ता. बायड)

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से बायड़-तालुका के आकरुंद गाँव के नूतन मंदिर निर्माण के हेतु सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में मंदिर निर्माण कार्य हेतु शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी (पूर्व महंतश्री मथुरा) ने हरिभक्तों को कथा वार्ता का लाभ प्रदान किया था । शाकोत्सव भी धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग में सुखनंदनदास, नरेन्द्र भगत तथा प्रशांत भगतने सेवा में भाग लिया था । (चंद्रेश चौधरी)

रामपुरा भंकोडा में शाकोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्रीहरि जहाँ पधारे तथा संतो को स्नान करवाकर भगवानने बाजरे की रोटी, चटनी तथा मक्खन जिस पत्थर पर बिराजमान होकर खाया था । उस प्रसादी के पथ्थर पर आज भी वे दर्शन देते है । इस मंदिर में ठाकुरजी समक्ष प्रातः धून-भोग-आरती की जाती है । यहाँ सुंदर शाकोत्सव मनाया गया था ।

(अरजणभाई मोरी)

सलाल गाँव में पारायण का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद-आज्ञा से तथा भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी की प्रेरणा से गाँव सलाल में प.भ. भगुभाई जेठाभाई पटेलने अपने पिताश्री अ.नि. जेठाभाई रणछोड़भाई पटेल (तलाटी) के मोक्षार्थ श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण का आयोजन नाथद्वारा महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी ने किया था । इस प्रसंग पर वक्तापद पर शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (जमीयतपुरावाले) ने सुमधुर शैली में कथा की थी । इस प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री यजमान परिवार के निमंत्रण के सन्मान हेतु सलाल पधारे थे । प.पू. महाराजश्री का भव्यता से स्वागत करके शोभायात्रा निकाली थी । प.पू. गादीवालाश्री भी बहनों को दर्शन हेतु पधारे थे । इस प्रसंग पर शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजीने सभा संचालन करके प्रासंगिक उद्बोधन किया था । अहमदाबाद महंतश्री स.गु.शा. स्वामी हरिकृष्णदासजीने सुंदर प्रवचन के साथ आशीर्वाद प्रदान किये थे। यजमान परिवार के निमंत्रण को सम्मान देते हुए देश-विदेश से पधारे हुए हरिभक्तोंने सत्संग-देव, आचार्य, संत सत्संगी को दर्शन का लाभ दिया था । अमेरिका से पधारे हुए मणीभाई विठ्ठलभाई पटेल सलालवालेने गाँव में श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण वाडी के लिए रु। ११,००,०००/- का दान दिया था । इसीलिए प.पू. महाराजश्रीने प्रसन्न होकर आशीर्वाद स्वरुप घर तथा श्रीहरि की मूर्ति भेंट स्वरुप प्रदान की थी । यजमान परिवार को भी मूर्ति-खेश ओढ़ाकर हार पहनाकर आशीर्वाद प्रदान किये थे । इस प्रसंग पर शा. सुखनंदन स्वामी, शा.स्वा. विश्वविहारीदास, भुज से नीलकंठदासजी, लालोडा से विश्वप्रकाशदासजी, पार्षद नरेन्द्र भगत, प्रशांत भगत तथा भोगी लाल भगत आदिने सेवा प्रदान की थी । यजमानश्री भगुभाई पटेलने सभी का आभार व्यक्त किया था। (शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी

घमासणा में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

श्रीहरि के दिव्य चरणों से अंकित दिव्य भूमि दंढाव्य देश के धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १२-१२-२०१० के दिन भव्य शाकोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मनाया गया ।

समग्र शाकोत्सव का आयोजन पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के शिष्य स्वामी जयप्रकाशदासजी (जे.पी. स्वामी) के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ था ।

सबसे पहले प.पू. महाराजश्रीने प्रसादी के स्थान पर बनी चरणपादुका का उद्घाटन किया था । इस चरण पादुका का निर्माण पू. स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारणघाट), पू. स्वा. कृष्णवल्लभदासजी तथा प.भ. कांतिभाई अंबालाल पटेल तथा

कोठारी पोपटभाई के मार्गदर्शन अनुसार हुआ था।

सभा में आदरजवाले राम स्वामीने कथामृत का पान करवाया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से दिव्य शाकोत्सव का वघार हुआ था। तब समग्र विस्तार में दिव्यता का प्रसार हो गया था।

इस प्रसंग पर पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, शा. आनंदजीवनदासजी, घनश्याम स्वामी तथा शा. विश्वस्वरुपदासजीने घमासणा गांव के महिमा के बारे में बताया था। अन्य संतो में कलोल से स्वामी हरिचरणदासजी, पू. देवप्रकाशजी (नारणघाट), पू. ब्रह्मचारी राजेश्वरानंदजी तथा श्री वल्लभ स्वामी (ईसंड), नीलकंठ स्वामी, पुराणी स्वामी, विश्वविहारी तथा कोठारी जे.के. स्वामी आदि संतगण पधारे थे। गाँव के हरिभक्तोंने श्री स्वामिनारायण म्युझियम में अपनी तरफ से अच्छी सेवा लिखवाकर तथा शाकोत्सव में यजमान बनकर सेवा की थी।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभा को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे।

घमासणा तथा आसपास के ३००० से भी अधिक भक्तोंने शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हो गये थे। सभा संचालन शा. अभयप्रकाशदासजीने किया था।

(उर्मिक पटेल तथा तपन पटेल)

दहेगाँव में धनुर्मास धून तथा श्री स्वामिनारायण म्युझियम प्रचार हेतु संतगण पधारे थे

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से दहेगाँव टेबला फली के मंदिर में कई बरसों से धनुर्मास की धून का आयोजन होता आया है। कोठारी प.भ. अरविंदभाई अमीन तथा प.भ. हर्षदभाई पटेल आदि कई हरिभक्तोंने सक्रियता दिखाई थी। इस प्रसंग पर पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से धनुर्मास में शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी, निलकंठ स्वामी तथा मुनि स्वामी पधारे थे तथा कथावार्ता का सुंदर लाभ दिया था। संतोने नांदोल गाँव में भी पधारकर हरिभक्तों को कतामृत वाणी का लाभ दिया था। दहेगाँव मंदिर में शाकोत्सव भी धूमधाम से मनाया गया।

(हर्षदभाई पटेल)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

सुरेन्द्रनगर मंदिर में पांचवाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से यहाँ मंदिर का पाँचवा पाटोत्सव प.भ. प्रविणभाई भवानभाई चावड़ा (सुरेन्द्रनगर) (वर्तमान राजकोट) परिवार की तरफ से मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. १७-११-२०१० से ता. २३-११-२०१० तक श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण स.गु.शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण, नारणपुरा महंतश्री) तथा शाँ.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (मूली) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी। सात दिन व्याख्यान में शा.स्वा. व्रजवल्लभदासजी (मूली), शा. स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी (वांकानेर) विश्वविहारीदासजी (ध्रांगध्रा), शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (मूली), पुराणी स्वा. रामकृष्णदासजी (ध्रांगध्रा) आदि संतोने सुंदर कथा का लाभ दिया था।

कारतिक कृष्णपक्ष-२ ता. २३-११-२०१० के दिन मुख्य प्रवेशद्वार का उद्घाटन श्री ठाकुरजी का महाभिषेक अन्नकूट आदि कार्यक्रमों को धूमधाम से मनाया गया था। प्रत्येक रात्रि में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये गये थे। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारे थे तथा दर्शन आशीर्वाद का सुख प्रदान किये थे। तथा अहमदाबाद, मूली, धोरेला, चराड़वा, कांकरिया, ध्रांगध्रा आदि स्थानों से संतगण तथा सांख्ययोगी बहने पधारी थे। मूली के गाँव में से कई हरिभक्त दर्शनहेतु पधारे थे। इस प्रसंग पर पूजारी स्वा. शांतिप्रकाशदासजी, पूजारी स्वामी विश्वस्वरुपदासजी, राजु स्वामी (अहमदाबाद), सूर्यप्रकाशदासजी स्वामी, शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी के शिष्य मंडल तथा स्वामी विष्णुचरणदासजी आदि ने सेवा में भाग लिया था। समग्र सभा का संचालन शा.प्रेमवल्लभदासजीने किया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने उत्तम सेवा प्रदान की थी। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

प्रसादीभूत तावी गाँव में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्रीहरि के दिव्य चरणों से अंकित तथा श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ के मुख्य श्रोता मुक्तराज श्री ज्येष्ठजीत राजाकी तावी नगरी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद् से तथा मूली के महान संत अ.नि. पू.स.गु. स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की दिव्य प्रेरणा तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी के सहकार से यहाँ के भाई तथा बहनोने मंदिर के पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से मनाया था। इस प्रसंग पर प.भ. त्रिभोवनभाई मिस्त्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यकारी सेवक प.भ. सजुभा वाधुभा राणा के यजमान पद पर ता. २७-११-२०१० से ता. ३-१२-२०१० तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण पू.स.गु.शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण नारणपुरा महंतश्री) के सुमधुर कंठ से सम्पन्न हुई थी। इस प्रसंग के उपलक्ष में त्रिदिवसीय श्रीहरियाग, अन्नकूट तथा ठाकुरजी के अभिषेक का सुंदर आयोजन हुआ था। प.भ. सजुभा राणा के आमंत्रण को मान देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, बहनो के आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारी थी।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद, मूली, ध्रांगध्रा, खाण तथा नारणघाट मंदिर से संतगण पधारे थे। कई सांख्ययोगी बहनोंने पधारकर कथा-वार्ता का लाभ दिया था। समस्त गाँव को

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की तरफ से आशिर्वाद दिये तथा सत्संग का व्याप करने की आज्ञा की। समग्र सभा का संचालन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी (सु.नगर) ने किया था। अन्य सेवा में मूली के स.गु. स्वामी धर्मप्रियादसाजी, बालस्वरुप स्वामी तथा कनुभगत ने किया था।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

यहाँ के मंदिर में बिराजमान बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के सानिध्य में पवित्र धनुर्मास में कथा-वार्ता, कीर्तन, अन्नकूट, अभिषेक तथा रास-गरबा का आयोजन महंत भक्तवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में हुआ था। हरिभक्तों ने सुंदर लाभ लिया था।

(कोठारी साधु वंदनप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बलोल (भाल) में धनुर्मास का उत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मवंशी के आशीर्वाद से कवि सम्राट देवानंद स्वामी की जन्मभूमि के इस हरिमंदिर में प्रातः ५-३० से ७-३० तक श्रीहरि नाम मंत्रधून, कथा वार्ता-कीर्तन आदि धूमधाम से संपन्न हुआ।

(खटाणा जेसंगभाई)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन न्युजर्सी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद सह आज्ञा से हमारे न्युजर्सी मंदिर में गवैया स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी के मधुर सूर में कीर्तन संध्या कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ था। ठाकुरभाई तथा पीनाकिनभाई जानी ने साथ में सूर मिलाया था।

इस प्रसंग पर पू. बिन्दुराजा तथा श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार पधारे थे। मंदिर के प्रेसिडेन्ट श्री भक्तिभाई तथा प.भ. प्रहलादभाई पटेलने अच्छा सहयोग दिया था। चंद्रप्रकाश स्वामी को विदाई का हार पटेल करशनभाई (डांगरवावाले) ने पहनाया था।

(पंकज पी. पटेल)

तुलसी विवाह का उत्सव मनाया गया

यहाँ पर तुलसी विवाह का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। जिस में वीमाबहन महेन्द्रभाई चोक्सी, तथा भावनाबहन मनोजभाई पटेल (डांगरवावाले) यजमान बने थे। श्री वसंतभाई पटेलने सभी को भोजन करवाया था। महंत स्वामी चंद्रप्रकाशदासजीने सुंदर कथा-कीर्तन का लाभ दिया था। बाल विभाग के गुजराती वर्ग में सभी में प्रथम आनेवाले श्री सौम्यकुमार को महंत स्वामीने हार पहनाकर सन्मान किया था। श्री प्रहलादभाई पटेलने नूतन मंदिर की जानकारी दी थी। प्रेसिडन्ट प.भ. भक्तिभाईने आभार विधिकी थी।

(पी. शाह)

कोलोनीया मंदिर में प.पू. महाराजश्री का प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया न्युजर्सी में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३८ वाँ प्राकट्योत्सव एवं आई.एस.एस.ओ. का स्थापना दिवस हरिभक्तोंने साथ मिलकर धूमधाम से मनाया था। प्रासंगिक सभा में महंत स्वामी ज्ञानप्रकाशदासजी तथा विहोकन मंदिर के महंत स्वामी गवैया चंद्रप्रकाशदासजी, श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार ने बालको के साथ केक काटकर जन्मोत्सव मनाया था। संत-हरिभक्तोने साथ मिलकर प.पू. महाराजश्री की तसवीर का पूजन अर्चन किया था।

मुकुटोत्सव पुनम मनाया गया

यहाँ प्रत्येक पूनम को धूमधाम से मनाया जाता है। जिस में कई भाविक भक्त दर्शन करने पधारते है। गवैया स्वामी चंद्रप्रकाशदासने नंद कीर्तन नंद संतो के कीर्तन गाकर सभी को आनंदित कर दिया था। इस प्रसंग पर भारत से पधारे महेसाणा के मेयरश्री तथा स्टाफने भाग लिया था।

दिपोत्सव मनाया गया

अपने मंदिर में दिपोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। कालीचर्तुदशी के दिन श्री हनुमानजी का पूजन आरती समूहमें की गई थी। दिपावली के शुभ दिवस पर लक्ष्मीपूजन-शारदा पूजन विधिवत सम्पन्न हुआ था। अनेक प्रकार के विविधव्यंजनो से ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाया गया था। महंत स्वामीने अन्नकूट की आरती उतारकर हजारो हरिभक्तो को दर्शन का दिव्य लाभ दिया था। महंत स्वामीने श्री हनुमानजी का, लक्ष्मीदेवी तथा अन्नकूट का सुंदर मार्गदर्शन दिया था।

तुलसी विवाह

२० नवम्बर को तुलसी विवाह का सुंदर आयोजन किया गया था। हरिभक्तोने यजमान पद का लाभ लिया था। बहनोने तुलसीमाता तथा विष्णु भगवान के सुंदर सूर में कीर्तन गाये थे। श्री पिनाकीनभाई जानीने समग्र विधियजमान परिवार का फूलहार से स्वागत किया था। (श्री स्वा. मंदिर कोलोनिया)

वोशिंग्टन डीसी (आई.एस.एस.ओ. चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा आशीर्वाद से यहाँ सुंदर सत्संग प्रवृत्ति चल रही है।

५ नवम्बर शुक्रवार साम ७-१५ से ९-४५ तक केटन्स वीलनीडईझ ईन में सुंदर सत्संग सभा हुई थी। काली चतुर्दशी के दिन श्री हनुमानजी का पूजन-आरती तथा कथा में हनुमानजी का माहात्म्य, धून, कीर्तन, आदि कार्यक्रम समूह में किये गए। २० नवम्बर शनिवार की साम को ४ से १० ईल्करीझ चर्च के होल में सभा हुई थी। "आज मारे ओरडे" से शुरुआत की गई। अन्नकूट के निमित्त भोग चढ़ाया गया था। एल.ए. मंदिर से सेल फोन पर डी.के. स्वामीने अन्नकूट का माहात्म्य कहा था। इन्टरनेट पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामीने नये वर्ष की शुभकामनाएँ-आशीर्वाद प्रदान किये थे।

(कनुभाई पटेल)

लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से कालीचतुर्दशी ता. ४-११-२०१० की साम ६ से ८ श्री हनुमानजी महाराज का पूजन-अर्चन भोग आरती श्री हरीशभाई गोविंदभाई पटेल के यजमान पद पर सम्पन्न हुई।

ता. ५-११-२०१० को दिवाली पर पुस्तक पूजन श्री कांतिभाई भट्ट ने विधिपूर्वक करवायी थी।

ता. ६-११-१० शनिवार के नूतन वर्ष को मंदिर ६ बजे से ही खोल दिया गया था। दोपहर १२-०० बजे भिन्न पकवानो का भोग ठाकुरजी को लगाया गया था। जिसके यजमान पद का लाभ रुतुलभाई गिरीशभई पटेल तथा श्री दामोदरभाई राणा के परिवार ने लिया था। दोपहर १२ से ४ अन्नकूट के दर्शन हुये थे। शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी तथा शा.स्वा. सुव्रतस्वरुपदासजी के विदाय समारंभ का आयोजन किया गया था।

नए वर्ष की सभा रविवार ता. ७-११-२०१० साम के ५ से ७ तक रखी गई थी। जिस में हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वचन हरिभक्तों को सुनाये गये थे। मंदिर की रोशनी से सजाया गया था। (किरीटभाई भावसार सहमंत्री लेस्टर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम (यु.के.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से यहाँ सत्संग प्रवृति अच्छी है। धनतेरस के दिन खजानची श्री अशोकभाई पटेलने श्री लक्ष्मीजी का विधिवत पूजन आरती की थी। काली-चर्तुदशी को पूजारी केशु भगतने श्री हनुमानजी का पूजन आरती की थी। शारदा पूजन में कई वेपारीओंने लाभ लिया था। शनिवार के दिन ठाकुरजी समक्ष विभिन्न प्रकार का भोग अन्नकूट में लगाया गया था। सुबह १० से रात्रि के ९ तक हर घंटे पर आरती की गई थी। कई हरिभक्तोंने दर्शन करके अन्नकूट का प्रसाद लिया था।

इस प्रसंग पर लेम्बर्थ के मेयर श्रीमान पाटील दर्शन के हेतु पधारे थे। तथा कथा का लाभ लेकर प्रसाद ग्रहण किया था।

युवान हरिभक्तों ने मंदिर में अन्नकूट उत्सव में जंगल के फीम को लेकर सजावट की थी। २० तथा २१-११-२०१० को तुलसी विवाह धूमधाम से मनाया गया था। (अजय पटेल स्ट्रेधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्वीडन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भूज मंदिर के महंत स्वामी की आज्ञा-आशीर्वाद से सत्संग प्रचार हेतु भूज मंदिर के संत स्वा. मुकुन्दजीवनदासजी, शा. विज्ञानस्वरुपदासजी, शा. शुकमुनिदासजी तथा स्वा. सुव्रतमुनिदासजी ता. ४-११-१० धनतेरस के दिन पधारे तब उनका स्वागत हरिभक्तोंने धूमधाम से किया था। यहाँ प्रथमबार संतगण दिपोत्सव में पधारे थे। संतोने ठाकुरजी को अन्नकूट का अलौकिक भोग लगाकर उसका माहात्म्य तथा धर्मकुल की आज्ञा में रहकर भक्ति करने की शीख दी थी।

मंदिर के प्रमुख श्री नरोत्तमभाई नरसी, पूजारी मनजी रामजी, लींबाजी, मंत्री जयेश पटेल, ट्रस्टीओं में हर्षद पटेल, रमेशभाई केराई, खजानची वाधजीभाई लींबाजी तथा ज्होन स्कोप के अग्रणी रवजीभाई देवजी वेकरीया तथा वालमभाई आदि हरिभक्तोंने संतो के आशीर्वचन प्रदान किये थे। ता. ४-११-१० से १३-११-१० तक संतोने कथावार्ता का लाभ दिया था।

(सुरेशभाई केराई युवा कार्यकर)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

बलोल (भाल) : प.भ. काशीबहन ठाकरसीभाई खेर तथा प.भ. मोतीभाई डाह्याभाई परमार श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

कोठंबा : श्री गौरांग (जीगर) गोविन्दभाई काछिया (उम्र २६ वर्ष श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सदस्य) ता. ५-१२-१० को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

मीतली (ता. खंभात) : वर्तमान में अमहदाबाद श्री शैलेषभाई कनुभाई व्यास (चीप इन्जिनियर पीब्ल्यू.डी.) उम्र ६३ ता. १७-११-१० को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

सांकोदरा (धोलका देश) : श्री को. कालूभाई हीराभाई पटेल ता. ७-११-१० के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

अहमदाबाद : श्रीमती गं.स्व. हीरागौरी मनसुखलाल सोनी ता. ७-११-१० को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुयी हैं।

जीरागढ (हालार) : श्री रतनशी लक्ष्मणभाई वरु ता. १४-१२-१० को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

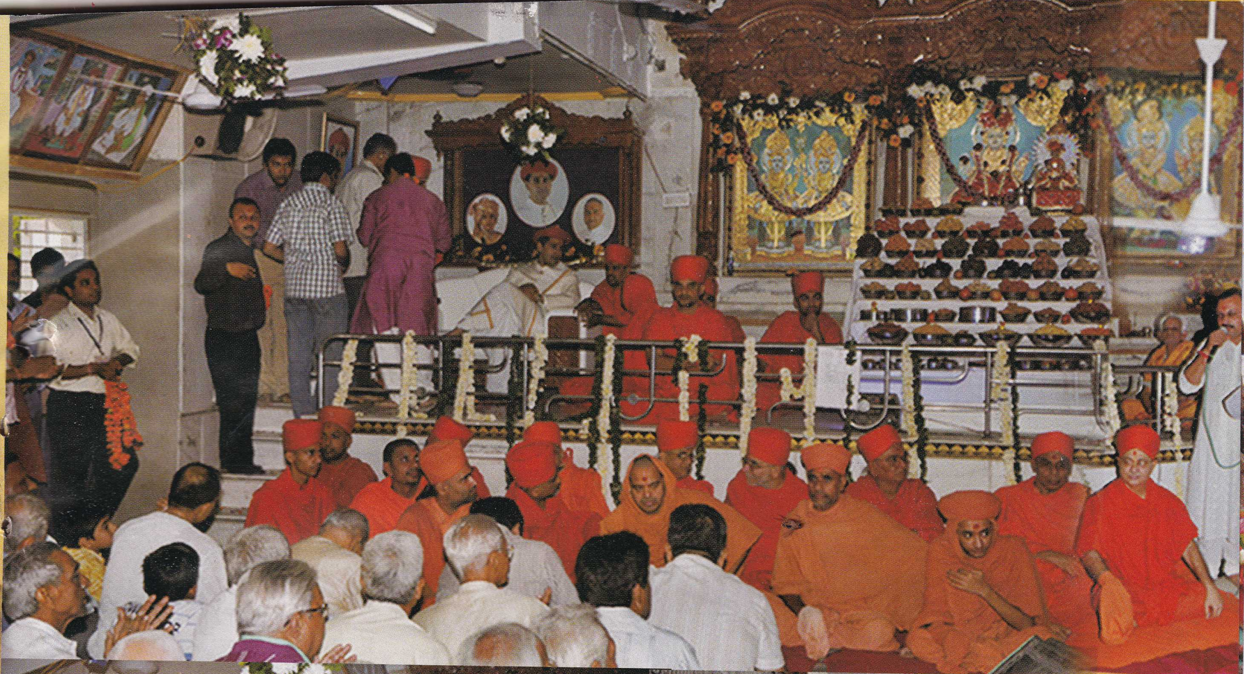

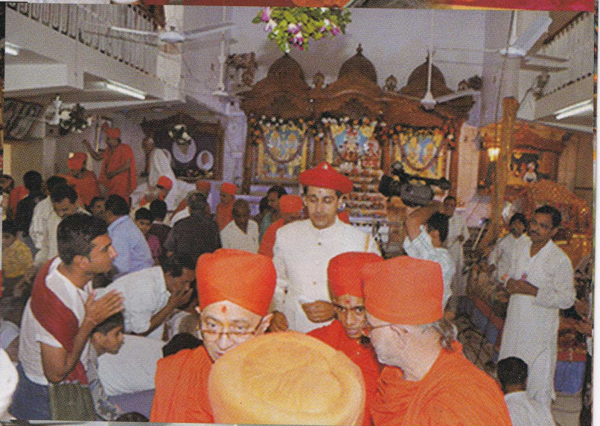

जीवराजपार्क श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री हनुमानजी - श्री गणपतिजी की मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर दर्शन-आशीर्वाद देते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा महंत स.गु. शा. हरिकृष्णदासजी, स्वामी देवप्रकाशदासजी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी एवं स.गु. छोटे पी.पी. स्वामी (नारायणघाट)

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

Museum Year
March 2010 - March 2011

Shree Swaminarayan Museum

इ.स. २०१०-११ का वर्ष "म्युझियम वर्ष"

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से मार्च २०११ वर्ष "म्युझियम वर्ष" के रुप में प्रकाशित किया जाता है।

उद्घाटन ८ मी मार्च २०११

संवत २०६७ फागुन शुक्ल तृतीया को श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव

www.swaminarayanmuseum.com/org

Praful Kharsani